ॐ श्री सत्‌नाम साक्षी

युगपुरुष - युगदृष्टा - कर्मयोगी - तपस्वी
आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के
जीवन से जुड़े हुए मार्मिक

40
पावन प्रसंग

संकलन / संपादक
प्रेम प्रकाशी संत श्री मोनूराम जी
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर (राज.)
श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद (गुज.)

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

युगपुरुष - युगदृष्टा - कर्मयोगी - तपस्वी आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवन से जुड़े हुए मार्मिक

40 पावन प्रसंग

संकलन / संपादक
प्रेम प्रकाशी संत श्री मोनूराम जी
श्री अमरापुर स्थान, जयपुर (राज.)
श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद (गुज.)

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के संस्थापक

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज

परब्रह्म परमात्मा की घोषणा है कि जब जब धर्म का विनाश होने लगता है, तब-तब मैं अनेक रूपों में प्रकट होता हूँ. भगवान श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण आदि पूर्णावतार और संत-महात्मा साक्षात् धर्म के अवतार होते हैं और इन्हीं साक्षात् धर्म के अवतारों में श्री प्रेम प्रकाश पंथ के संस्थापक '**आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज**' भी एक सिद्ध संत हैं !

यदा हि देशे यवनं प्रकोपात्, सिन्धोसमीपे बत धर्म हानिम्।
जनाञ्च सर्वान व्यथितान विलक्ष्यः, श्री टेऊँरामेण धृतोऽवतार।।

आचार्यश्री का इस पृथ्वी पर अवतरण सम्वत् १९४४ को आषाढ़ माह के शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि, शनिवार (सन् 1887) के दिन अमृत वेला धर्ममयी माता कृष्णादेवी व पिता श्री चेलाराम के घर हुआ. आचार्यश्री के अवतरण के समय चारों ओर शीतल मन्द सुगन्धित पवन चल रही थी. आनन्द की लहरें उठकर, वर्षा की नन्ही बूंदें, पुष्पों के रूप में बरस रही थीं, प्रकृति ने अपना पूरा आनन्द बिखेर कर वातावरण स्वर्ग के समान कर दिया ! कुल-पण्डित आचार्य श्री जयराम जी ने ग्रह नक्षत्र देखकर भविष्यवाणी की "**बच्चा होनहार होगा तथा अवतार के रूप में कहलायेगा।**" नामकरण संस्कार में आचार्यश्री का नाम '**टेऊँराम**' रखा गया !

निर्गुण पूर्ण पारब्रह्म, जो सत् चित सुखधाम।
कृष्णा के घर प्रकटिया, बालक टेऊँराम।।

बचपन से ही आपको ईश्वर भक्ति सम्बन्धी वातावरण प्राप्त

हुआ ! माता ने सर्वप्रथम आपको **'राम'** का नाम बोलना सिखाया ! आपके खेलने का ढ़ँग सबसे अलग था, बच्चों को एकत्रित कर स्वयं नेत्र बन्द कर आसन लगवाकर **'राम-नाम'** की धुनि लगाया करते थे, जिससे पूरा वातावरण ही **'राम-मय'** हो जाता था !

आपका चित्त तो सदैव ईश्वर-भक्ति में ही रहता था. प्रतिदिन नदी किनारे अथवा एकांत में जाकर ईश्वर का ध्यान करते रहते, भूख-प्यास से बेखबर अपनी ही मौज में रहकर विचार करते कि मुझे इस संसार सागर से उस पार अर्थात् परमात्मा की ओर जाना है ! परमात्मा की ओर जाने में मोह, ममता बाधक बनी हुई है, इन सबका त्याग करके परमात्मा की ओर जाने के लिये सत्पुरुषों का मार्गदर्शन लेना होगा ! कर्म करते हुए मन में यही इच्छा है कि मैं **'परमात्मा'** को **'प्यारा'** लगूँ, मात्र 14 वर्ष की अवस्था में आपने **स्वामी आसूराम जी महाराज** से गुरु दीक्षा प्राप्त की ! आपने गुरुदेव के सानिध्य में रहकर भूख-प्यास, दुःख-सुख, सर्दी-गर्मी आदि कष्टों को सहन करने की शक्ति प्राप्त की !

सत्गुरु के युग चरण की, सेवा करि निष्काम।
स्वामी आसूराम से, मंत्र लिया सुख धाम।।

अपने सदुपदेशों में गुरु महाराज जी कहते थे कि मानवता से बड़ा कोई धर्म नहीं है ! कुदरत ने इस पृथ्वी पर करोड़ों जीव-जन्तु पैदा किये हैं, उनमें केवल मनुष्य ही अलग-अलग धर्मों में बंटे हुए हैं ! क्या पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों में धर्म का विभाजन हुआ है ? जब उनमें धर्म का विभाजन नहीं हुआ है तो मनुष्य ने क्यों अपने को अलग-अलग धर्मों में बाँट रखा है ! प्रकृति के सभी नियम जैसे गर्मी, सर्दी, वर्षा सभी धर्मों में एक से लागू हैं तो फिर मनुष्य जाति क्यों धर्म के नाम पर अलग-अलग बंटी हुई है !

श्री गुरु महाराज जी द्वारा ऐसे सच्चे धर्म के प्रचार का परिणाम

यह हुआ कि उनके अनुयाइयों में हिन्दू-मुस्लिम आपस में प्रेम-पूर्वक रहने लगे !

सत्य-मार्ग पर लोगों को राह दिखाने हेतु गुरु महाराज जी ने संत मण्डल की स्थापना की, जिसका नाम **'श्री प्रेम प्रकाश मण्डल'** रखा ! एक बार अपनी सन्त-मण्डली के साथ देशाटन करते गुरु महाराज जी सिन्ध प्रान्त के नवाबशाह जिले के टण्डाआदम शहर के दक्षिण में एक घने जंगल में आकर रुके. इस घने जंगल में जगह- जगह रेत के टीले थे, यहीं पर अपनी मण्डली के साथ कर-सेवा करके 20-25 झोपड़ियों व सत्संग स्थल का निर्माण कर **'श्री अमरापुर स्थान'** की स्थापना की. यह स्थान डिब के नाम से प्रसिद्ध हुआ !

श्री गुरु महाराज जी ने अपने मूल मंत्र **'सत्नाम साक्षी'** को प्रणाम-मन्त्र के रूप में भक्तों को आत्म-सात् करने की दीक्षा दी. **'सत्नाम साक्षी'** महामंत्र आज भी पूरे विश्व में अपनी खुशबू बिखेर रहा है. **'प्रेम प्रकाशी'** एक दूसरे का अभिवादन **'सत्नाम साक्षी'** के सम्बोधन से ही करते हैं !

सद्गुरु महाराज जी ईश्वर से यही प्रार्थना करते थे कि सभी को सद्बुद्धि दो ताकि मानव सत्यधर्म पर चलते हुए, सच्चे कर्तव्यों का पालन करते रहें और अपने निश्चित जीवन का सफर शान्ति से पूरा कर सके !

श्री अमरापुर स्थान के सम्बन्ध में आचार्यश्री का कथन है कि इस पावन स्थान के दर्शन करने मात्र से मनुष्य की वृत्ति सत्कर्मों की ओर बढ़ती जाती है और इस पावन स्थल पर सत्संग का श्रवण करने से मनुष्य अमर हो जाता है !

देखो प्रेमी आय के, अमरापुर स्थान।
संत समागम पाय के, अपना करो कल्यान।।

धर्म के सम्बन्ध में आचार्यश्री का कथन है कि धर्म के कारण ही

जीवन की उन्नति होती है और सद्‌गति की प्राप्ति होती है, इसलिए जिस धर्म में जन्म लिया है, उसे कभी भी नहीं छोड़ना चाहिए ! प्राचीन समय में अपने धर्म की रक्षा के लिए अनेक ऋषि-मुनियों व धर्मात्मा राजा-महाराजाओं ने शीश- न्यौछावर कर दिये !

धर्म अपने मांहि हरदम प्यार कर नटना नहीं।
शीश जावे जान दे पर धर्म से हटना नहीं।।

सद्‌गुरु महाराज जी के उपदेशों के माध्यम से अनेक रचनाएँ (कृतियाँ) रची गई हैं, जिनमें प्रमुखतः "**श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ**" है, जिसमें ब्रह्मदर्शनी, दोहावली, कवितावली, छन्दावली, सलोकमाला, सोलह शिक्षाएँ, शान्ति के दोहे आदि हैं. श्री गुरु महाराज जी द्वारा रचित भक्ति-भजन, अमरापुर वाणी पुस्तक में संकलित हैं जो आज पूरे विश्व में अनन्त जीवों को मार्ग- दर्शित कर रही है.

अमर देश से आगमन, अमर देश प्रस्थान।
अमरापुर वाणी अमर श्री अमरापुर स्थान।।

इसी प्रकार सत्य सनातन धर्म का प्रचार - प्रसार कर अपनी लीला का संचरण करके सम्वत् 1999 के पुरुषोतम मास की चार तारीख, दिन शनिवार को 55 वर्ष की अल्प आयु में आचार्यश्री ने प्रेम प्रकाश आश्रम, हैदराबाद (सिन्ध) में आसन मुद्रा में अपना नश्वर शरीर छोड़ा. उनकी आत्म-ज्योति पारब्रह्म की महाज्योति में समा गई. पर उनका आलोक आज भी प्रेम- प्रकाशियों का पथ-प्रदर्शन कर रहा है.

समूचे देश-दुनिया में लाखों प्रेम प्रकाशीगण अनेक शहरों-कस्बों में स्थित श्री प्रेम प्रकाश आश्रमों में नित्य-प्रति सत्संग के माध्यम से सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के उपदेशों का श्रवण कर अपना जीवन सफल बना रहे हैं ! देश विभाजन के बाद सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने अपनी तपोस्थली जयपुर में '**श्री अमरापुर**

स्थान' की स्थापना की. जो आज **'प्रेम प्रकाश मण्डल'** का **'मुख्यालय'** है. इसी पावन स्थल पर सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज एवं सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का भव्य **'श्री मंदिर एवं समाधि स्थल'** स्थापित है. जहाँ हजारों श्रद्धालुजन प्रतिदिन आकर अपनी आस्था का अर्घ्य चढ़ाकर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं !

अब तो अमरापुर बनी, अद्भुत आलीशान।
जाँका दर्शन करत ही, आनन्द होय महान।।

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भक्ति और कर्म के अद्भुत उपासक थे. वैदिक सनातन धर्म की रक्षार्थ श्री गुरुदेव भगवान ने अपने साधना-तप-तपस्या के बल अथवा भक्ति- ज्ञान के प्रचण्ड प्रताप से एक नये निराले पंथ का शुभारम्भ किया. उनके द्वारा स्थापित **श्री प्रेम प्रकाश पंथ, श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ, सत्नाम साक्षी महामंत्र, पावन तीर्थ श्री अमरापुर स्थान का निर्माण**, विश्व के इतिहास में अमिट है !

चालीहा व्रत-महिमा

दर्शन से किया - चालीहा व्रत पूर्ण

हरि भक्त के संग से, हरि भक्ती मिल जाय।
कह टेऊँ हरि भक्ति से, हरि का दर्शन पाय।

संतों-महापुरुषों का इस धरा धाम पर अवतरण भी अनुपम-विलक्षण-दिव्यतम होता है, उनके आने का उद्देश्य-- मानव के मन को उस अविनाशी प्रभु परमात्मा की ओर मोड़ना है! जिसके लिए जीव का इस अमोलक मानव देह में आना हुआ! महापुरुषों के मंगल प्राकट्य के इतिहास इस बात के प्रमाण हैं।

सिंध-हिंद के महानतम संत शिरोमणि, महायोगी, युगपुरुष, सर्व उपमा योग्य, **''सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज''** का इस धरा धाम पर आना और सबके कष्ट-क्लेश मिटाकर हम सबको उस सत्मार्ग की ओर लगाने का समूचा श्रेय माता कृष्णादेवी के चालीस दिवसीय व्रत उपासना को ही जाता है! **सर्वप्रथम माता कृष्णादेवी ने ही 40 दिन फलाहार खाकर एवं भगवत् नाम सुमरण कर चालीहा व्रत पूर्ण किया था। चालीसवें दिन स्वप्न में भगवान शिव जी ने आकर दर्शन दिया और बोले- हम शीघ्र ही आपके घर अवतार लेकर आ रहे हैं। ऐसा आश्वासन (वरदान) पाकर माता कृष्णादेवी ने श्रद्धा भक्ति-भाव से 41 वें दिन उपवास पूरा किया। समय पाकर माता को तपस्या का फल मिला और हम सबके कल्याण कारक ईश्वरांश मंगलमूर्ति सद्गुरु स्वामी**

टेऊँराम जी महाराज ने इस धरा-धाम पर अवतरण लिया।

हम सबके हृदय में भी गुरुदेव व प्रभु परमात्मा के प्रति भक्ति-भाव प्रगाढ़ हो. इसी श्रद्धा-प्रेम से आज समस्त संसार इस चालीस दिवसीय चालीहा व्रत उपासना पर्व को श्रद्धा भक्ति-भाव से मनाते है और इसके लिए विविध धार्मिक आध्यात्मिक अनुष्ठान पूर्वक सत्कार्य भक्तों द्वारा किये जाते है।

चालीहा का महात्मय बहुत पुराना है! भगवान श्री झूलेलाल चालीहा महोत्सव भी सर्व मनोरथ सिद्ध करने हेतु भक्तों द्वारा मनाया जाता है. साथ ही अनेक देवी-देवताओं के 'चालीसा' भी प्रसिद्ध हैं- शिव चालीसा, हनुमान चालीसा, झूलेलाल चालीसा, दुर्गा चालीसा और साईं टेऊँराम चालीसा आदि. **'चालीहा महोत्सव'** के अन्तर्गत इसका नित्य नियम से पाठ करने से मनइच्छित फल की प्राप्ति होती है।

सर्व समर्थ सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के स्वर्णिम काल का वह ममस्पर्शी प्रसंग, **"साईं टेऊँराम चालीहा व्रत उपासना"** तत्कालीन समय में भी भक्तों द्वारा की जाती थी, इससे **'भक्त और भगवान की प्रगाढ़ता'** के बारे में पता चलता है।

卐 माता पदीबाई को दर्शन देना 卐

यह बात उस समय की है जब माता कृष्णादेवी को गुरुधाम सिधारे अभी एक महीना ही हुआ था कि **'सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** को प्रेमी भक्तों द्वारा पता लगा कि श्री गुरुदेव भगवान के दर्शनों की प्यास लिए गौंसपुर के भाई मनाराम की धर्मपत्नी **'माता**

पदीबाई ने भी चालीहा व्रत रखा है' और वह प्रभु परमात्मा-गुरुदेव के दिये अखण्ड नाम का सुमरण कर रही है, उसका संकल्प है कि जब तक **'सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** के दर्शन नहीं होंगे तब तक मैं कमरे से बाहर नहीं निकलूँगी और व्रत भी चलता रहेगा! ये बड़ा ही कठोर तप चल रहा था।

ऐसा दृढ़ निश्चय करके ही माता पदी बाई ने चालीहे व्रत की समय-सीमा को पूरा किया. माता पदी बाई ने व्रत पूरा हो जाने पर कमरे से निकलने के लिए घर वालों व पास पड़ौस रिश्तेदारों पंचों के अनुनय विनय को भी अस्वीकार कर दिया। माता पदी बाई भक्ति-भाव मिश्रित मृदुल वाणी में पूर्ण आस्था से बोली कि मेरे हृदय में गुरुदेव के प्रति प्रेम भाव सच्चा है और मेरी गुरुनिष्ठा अटूट है तो मेरे घर **'सद्गुरु साईं टेऊँराम बाबा'** जरूर आएँगे! अपनी दासी को दर्शन देने, तब ही चालीहा व्रत पूर्ण करूँगी, यह मेरा पक्का विश्वास है।

थक हारकर कंधकोट व गौंसपुर के पंचों ने टण्डो आदम पहुँचकर पूज्य सद्गुरु महाराज जी को सारी बात बताई. करुणानिधान, भक्तों की हर शुभ इच्छाओं को पूरी करने वाले अर्न्तयामी, सर्व ऋिद्धि-सिद्धि के मालिक, भक्तवत्सल, आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज! यह बात सुनकर तत्क्षण उठ खड़े हुए और बोले, चलो अभी चलते हैं. माता पदी बाई इतना कष्ट उठाकर प्रभु परमात्मा की भक्ति कर रही है. तो हम भी उस माता के अवश्य ही दर्शन करेंगे।

देखें! श्री गुरुदेव भगवान की कैसी भक्त वत्सलता- निर्मानता! कहाँ माता का संकल्प था कि मैं सद्‌गुरु महाराज जी के दर्शन करके ही व्रत खोलूँगी और कहाँ पूर्ण महायोगी परम दयालु '**सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज**' कह रहे हैं कि हम उस माता के दर्शन करेंगे! इसे कहते हैं **भक्त और भगवान का अनन्य प्रेम !** भक्त की भगवान के प्रति अटूट श्रद्धा।

श्री गुरुदेव भगवान का मंगल आगमन गौंसपुर में होते ही सर्वप्रथम माता पदी बाई को होता है- सद्‌गुरु महाराज जी का दिव्य दर्शन माता पदी कमरे से बाहर निकल कर सद्‌गुरु महाराज जी के श्रीचरणों में अत्यन्त प्रसन्न मन से कोटि- कोटि वन्दन करती है! उसके नेत्रों से प्रेम विह्वल अश्रुधारा बहने लगती है, जैसे भगवान श्रीराम का दर्शन पाकर माता शबरी के प्रेमाश्रु निकले थे- वैसे ही माता की आँखों से सजल धारा बह रही थी. तब श्री गुरुदेव भगवान ने अपना कृपा भरा वरद् हस्त उनके ऊपर रखा और उनका व्रत अनुष्ठान पूरा किया. तब वह माता बहुत गद्‌गद् प्रसन्नचित्त हुई।

तत्पश्चात् यहीं पर ''**श्री गुरुदेव भगवान**'' के पावन सानिध्य में हवन-यज्ञ अनुष्ठान, पूजा-पाठ एवं भजन-सत्संग का भव्य आयोजन हुआ! वहाँ के सभी प्रेमी ऐसा अद्‌भुत दृश्य देखकर बड़े प्रसन्न हुए! इसे कहते हैं भक्त और गुरु की अनन्त पराकाष्ठा! भक्त व भगवान का प्रेम!

सद्‌गुरु टेऊँराम का, चालीहा महोत्सव अभिराम।
श्रद्धा भक्ति से पाठ कर, होवे पूर्ण काम।।

गीता जन्म-मरण को सुधार देती हैं

हरि सम जग कुछ वस्तु नहिं,
प्रेम पंथ सम पंथ ।
सद्‌गुरु सम सज्जन नहिं,
गीता सम नहिं ग्रंथ ।।

एक समय श्री अमरापुर स्थान - टण्डेआदम-सिंध में **'युगपुरुष आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** संत मण्डली सहित सत्संग स्थल पर विराजमान थे ! तभी एक सरल-भोला- भाला सज्जन दौड़ता-दौड़ता हुआ **''आचार्य श्री''** के पास आया और प्रणाम करके कहने लगा - स्वामी जी ! मुझे वो पुस्तक दो ! जो आदमी को मारती है ! उस भक्त की ऐसी अटपटी बात सुनकर वहाँ उपस्थित सभी संत-महात्मा हँसने लगे ! वो भक्त बड़ा सरल सीधा - सादा व भोला-भाला था ! क्योंकि वो बात ही ऐसी कर रहा था ! परन्तु **''आचार्य श्री''** उस प्रेमी के इस सरल स्वभाव से परिचित हो गये और उसके भाव को भी समझ गये !

आचार्य जी ने कहा- भाई ! आप लोगों ने इस भक्त के भाव को नहीं समझा ! ये **''श्रीमद्‌भगवद् गीता''** ग्रंथ के लिये कह रहा है !

तब स्वामी जी ने कहा - अरे ! भाई - जिसके श्रवण करने

मात्र से मुक्ति मिलती हैं ! वह पुस्तक (गीता) किसी को मारती नही हैं ! वो तो सब जीवों को इस भवसागर से पार कर देती हैं ! "**श्रीमद्भगवद् गीता**" तो जन्म-मरण को सुधार देती हैं और मुक्ति देती है !'

आचार्य श्री जी ने उस सज्जन को अपने सरल स्वभाव से अच्छी तरह से समझा कर विदा किया ! यह देखकर सभी संत-महात्मा व भोला-भाला प्रेमी भक्त बड़ा प्रसन्न हुआ और '**श्री गुरुदेव भगवान**' को नत मस्तक करके चला गया ! धन्य धन्य है ऐसे परम उदारी संत महापुरुष ! शत् - शत् नमन् !

गीता सुगीता कर्तआ किमन्यैः शास्त्र विस्तरैः ।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुख पद्माद्विनिः सृता ।।

सर्वोंपनिष्दो गावो दोग्घा गोपाल नन्दन ।
पार्थोवत्सः सुधीर भेलि दुग्धं गीतामृतं महत ।।

करुणाशील व दयावान

आचार्य श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज सर्वगुण सम्पन्न होकर भी कितने सरलचित्त और निरभिमानी थे ! ये तो उनके प्रसंग सुनते है तब ही पता चल जाता है !

बात खण्डू गाँव की है ! आचार्य श्री अपने नित्य नियम अनुसार ब्रह्म मुहूर्त में सिन्धु नदी के तट से ध्यान - स्नान-साधना करके लौट रहे थे ! मार्ग में कुछ लोगों को वाद- विवाद करते देखकर रुक गये !

एक गरीब बुढी स्त्री किसी हरिजन (मेहतरानी) को विनती कर रही थी कि मेरे घर के द्वार पर एक स्वान (कुत्ता) मरा हुआ पडा है ! कृपया इसे दूर फेंक कर आओ ! मैं तुम्हें इसके लिए दो आने दूंगी ! लेकिन वह चार आने लेने की जिद्द पर रही ! बुढ़िया गरीब थी इतने पैसे देने का सामर्थ्य नही था !

तब बूढी स्त्री ने स्वामी टेऊँराम जी को देखकर उनसे कहा- भगत जी ! आप भी इस जमादारनी को समझायें कि भगवान के नाम पर दो आने में कुत्ता उठाने का काम कर दे ! मैं एक गरीब स्त्री हूँ ! इस पर **'श्री गुरुदेव जी'** ने भी मेहतरानी को बहुत प्रेम से समझाया पर वह न मानी ! वाद - विवाद को रोकने हेतु उस बूढी स्त्री की दयनीय दशा को देखकर **'श्री गुरुदेव'** द्रवित हो गये और

'भगवान के नाम' पर स्वयं ही उस कुत्ते को रस्सी से बाँधकर दूर फेंककर आयें !'

कहते है- श्री गुरुदेव के स्पर्श से उस कुत्ते का उद्धार हो गया!

इस घटना के बाद अनन्त प्रकार से खण्डू गाँव में **'श्री गुरुदेव जी'** के प्रति वाद- विवाद विरोध हुआ ! किन्तु महापुरुष अपनी मस्ती में मस्त ! कोई प्रतिक्रिया नही ! वैसे किसी भी मृत जानवर को उठाना जमादारों काम होता है ! लेकिन आचार्य जी ने **'भगवान के नाम'** पर ये निम्न कार्य भी करके दिखाया ! हम ऐसा कर्म कभी नहीं कर सकते ! क्योंकि हममें अहंकार भरा हुआ है ! लेकिन **'आचार्य श्री'** में किंचित मात्र भी अभिमान नहीं था ! 'संत बड़े परमार्थी !'

'श्री गुरुदेव भगवान' बड़े दयावान और करुणाशील थे ! उनसे किसी का दुःख- दर्द देखा नही जाता था ! तब एक गरीब बूढी माता की प्रार्थना व भगवान के नाम की महिमा जानकर ये तुच्छ व परोपकार का यह कार्य भी सरलता से कर दिया.... धन्य- धन्य है ऐसे संत- महापुरुष.. ! कोटि - कोटि नमन !

महापुरुषों को पैसे नहीं प्रेम - श्रद्धा की आवश्यकता

गुरू-शिष्य का संबंध अनादि काल से चला आ रहा है ! शिष्य गुरू की चरण-शरण में रहकर अपना उद्धार करता है ! '**श्री गुरूदेव**' भी अपने शिष्य के कल्याण के लिए नाम-दान की दीक्षा देते हैं ! इसी के साथ जीवन को कैसे जीना चाहिए ! ऐसे अनेक सत-उपदेश देकर जीवों का कल्याण करते हैं ! किसी भी प्रकार का स्वार्थ न हो ! ऐसे शिष्य - गुरू दोनों का कल्याण होता है!'

शिष्य ऐसा चाहिये,
गुरु को सब कुछ देह ।
गुरु ऐसा चाहिये,
शिष्य से कुछ न लेह ।।

एक भक्त परिवार था ! जो कि '**युगपुरुष सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जी**' के प्रति अनन्य निष्ठा रखता था ! निर्धन था पर दिल का अमीर ! नित्य-प्रति ''**श्री अमरापुर दरबार**'' पर सेवा- सत्संग- सुमरण का लाभ भी लेता था ! एक दिन मन में इच्छा हुई कि स्वामी जी मेरे घर भोजन प्रसाद ग्रहण करें ! स्वामी जी ने उस भक्त का आग्रह स्वीकार कर लिया !

एक दिन स्वामी जी कुछ संतों को लेकर उस भक्त के घर

भोजन - प्रसाद ग्रहण करने पधारें ! उस भक्त ने बड़े प्रेमभाव से संतो को भोजन खिलाया ! भोजन के पश्चात् उस भक्त ने स्वामी जी को ५ रूपये दक्षिणा दी ! उस समय ५ रूपये की कीमत बहुत ज्यादा हुआ करती थी ! स्वामी जी उस भक्त की स्थिति से परिचित थे ! उन रुपयों में से मात्र सवा रूपया लेकर उस भक्त का मान रखते हुए पुनः पौने चार रूपये वापस लौटा दिए ! उस भक्त ने स्वामी जी से कहा- स्वामी जी ! मैं अपको अपनी श्रद्धा...से दे रहा हूँ.. ! स्वामी जी ने कहा- बेटा ! हमनें तुम्हारा मान रखकर तुम्हारी भेंट स्वीकार कर ली ! हमें रुपये - पैसे की जरूरत नहीं ! प्रेम- श्रद्धा की आवश्कता है ! यह देखकर पूरा भक्त परिवार बड़ा गद्-गद् हो गया ! धन्य- धन्य है- ऐसे सत-महापुरुष... !

रहमान चोर बना भक्त रसखान

एक बार सिन्ध का मशहुर चोर रहमान **'श्री गुरुदेव सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज'** के आश्रम में चोरी करने आया ! हालांकि इससे पहले भी आश्रम में चोरी करने गया ! किन्तु बच गया था ! कभी भी पकडा नहीं गया था ! इसलिये अति विश्वासी होकर पुनः इस बार स्वामी जी के कमरे में चोरी करने गया ! उस वक्त स्वामी वहाँ नही थे !

इतने में ही भगवद् प्रेरणा से प्रेरित होकर एक संत जी वहाँ आ आये ! स्वामी जी के कमरे का दरवाजा खुला देखकर चोर होने की आशंका से उन्होने सब संतो को वहाँ बुलाया लिया !

सभी संत एकत्रित होकर कमरे में आये और उन्होने रहमान चोर को पकड़ लीया ! संत उस चोर को मारने लगे व गुस्सा भी करने लगे !

तब एक संत ने कहा - यह तो सद्गुरु महाराज जी का अपराधी है ! इसे दण्ड भी स्वामी जी ही देगें !

कुछ समय पश्चात् स्वामी जी भी वहाँ पधारे ! सभी संतो ने रहमान को स्वामी जी के समक्ष प्रस्तुत किया ! स्वामी जी को सारा समाचार सुनाया !

श्री गुरुदेव जी की विराट निर्मल छवि तथा हाथ में डण्डा देखकर रहमान भयभीत होने लगा ! परन्तु ये क्या.. ? रहमान की आशा के विपरीत **''महाराज श्री''** ने प्रेमपूर्वक रहमान के मस्तक पर हाथ रखकर उसका परिचय पूछा-वत्स ! कहो - कहाँ से आये

हो.. ?? क्या चाहिए.. ? महापुरुषों की इतनी रहमत व करुणा-प्रेम भाव देखकर चोर गद्-गद् हो गया ! तब रहमान चोर ने अपनी वास्तविकता बताई !

इतने में ही एक सज्जन प्रेमी द्वारा सूचित किये जाने पर पुलिस भी वहाँ आ गई ! तब दरोगा (इन्सपेक्टर) ने आते ही सर्वप्रथम ईश्वर तुल्य सद्गुरु महाराज जी के श्री चरणों में नमन किया एवं रहमान चोर के बारे में पूछा- तब कृपा निधान स्वामी जी ने चोर की आश्रम में उपस्थिति से मना कर दिया ! इस पर दरोगा ने एक कोने में हाथ जोड़े खड़े भय से काँपते हुए रहमान के बारे में पूछा - तो दया सिन्धु स्वामी जी ने कहा कि- यह तो रसखान है ! कोई चोर नहीं ! यह तो दुनिया के चित्त-चोर भगवान श्री कृष्णजी का भक्त है ! "**श्री गुरुदेव**" का ऐसा उत्तर सुनकर दरोगा प्रणाम करके वहाँ से चला गया.. !

स्वामी जी की ऐसी दयालुता- समदर्शिता देखकर रहमान चोर '**श्री गुरुदेव**' के 'श्री चरणों' में गिर गया एवं अपनी भूल-गुनाहों के लिए माफी माँगने लगा !

रहमान का ऐसा समर्पण भाव देखकर स्वामी जी ने कहा-अब तुम भी भक्त रसखान बनकर भगवान श्री कृष्ण व गुरु की भक्ति करो ! ईश्वर तुम्हारा कल्याण करेंगें !

इस पर स्वामी जी के समक्ष रहमान ने कहाः-

भटकत फिरत-चोरी करत, दर-दर पर रहमान ।
टेऊँराम गुरु कृपा करके, बना दिया रसखान ।।

इस प्रकार महापुरुषों ने उस चोर पर कृपा करके रहमान को '**भक्त रसखान**' बना दिया ! ऐसे होते है कृपा निधान संत-महापुरुष ! कोटि-कोटि नमन् !

ब्राह्मणी वेश मे आई माँ लक्ष्मी देवी

भगवान को जो सर्वस्व अर्पण कर देता है....तो भगवान भी उसकी सदैव रक्षा करते है ''भक्तनि जा भगवान- हरदम कारज संवारे'' कितनी भी विपति, कष्ट, संकट आ जाए पर भगवान किसी न किसी रूप में आकर भक्तों की रक्षा अवश्य ही करते हैं और भक्तो का मान बढ़ाते हैं..'

सिन्ध- टण्डा आदम में रेत के टीले के ऊपर **'युगपुरुष सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** द्वारा श्री अमरापुर दरबार का निर्माण कार्य चल रहा था ! चारों ओर रेत ही रेत थी ! तब वहां छोटी- छोटी पर्ण कुटियाएँ प्रारम्भ में बनाई गई थीं ! सेवाधारियों सहित स्वामी जी भी दिन भर रेत के टीले पर निवास करते थे ! सारा सामान, बर्तनादि भी वहां खुले पड़े रहते थे !

एक दिन रात के समय कुछ चोर वहां आए और सारे बर्तन, खाद्य सामग्री चुरा कर ले गए ! जब संत व सेवाधारियों ने स्वामी जी से कहा- स्वामी जी ! आपकी आज्ञा हो तो हम चोरों को ढूंढ कर लावें...

तब स्वामी जी ने कहा- 'आप लोग शांत होकर बैठ जाओ'- देखो ! भगवान अभी क्या- क्या रंग दिखलाते है ! कैसी- कैसी लीला करते है..?? अब संत- महात्माओं व सेवकों के पास

खाने-पीने के लिये कुछ भी नहीं बचा था और ना ही बर्तन आदि सामान ही था ! सभी भूखे- प्यासे चिंता कर रहे थे ! भोजन कैसे मिलेगा कहाँ से आयेगा ? पर जिसे भगवान पर पूर्ण भरोसा होता है! उसे भला किस बात की चिंता ??'

कुछ समय बाद एक ब्राह्मण महिला, जिसका नाम लक्ष्मी था! वह भोजन तैयार करके ले आई और संतों को दिया... बहुत से बर्तन भी साथ में लेकर आयी !

संत- महात्माओं ने उस माता से पूछा- आप कौन हैं ? कहाँ से आयी है ? भोजन किसने भेजा है ? तब माता ने उतर दिया- **''मेरा नाम लक्ष्मी है ! मैं ब्राह्मण जाति की हूँ''** आज प्रातःकाल मेरी अन्तर्आत्मा से आवाज आई कि पास में रहने वाले संत- महात्माओं को भोजन- प्रसाद खिलाओ ! तभी मै भोजन लेकर आई हूँ ! आप आराम से भोजन प्रसाद खाओ ! बर्तन भी यही रख देना ! इतना कहकर वह माता चली गई !

यह देखकर सभी आश्चर्यचकित हो गये ! तब सभी संत-महात्मा एवं भक्तजन स्वामी जी को हाथ जोड़कर कहने लगे- हे प्रभु ! आपकी महिमा अपरम्पार है ! हम अज्ञानी आपकी लीला को नहीं समझ सकते ! भोजन कहाँ से आया...? किसने भेजा...? उसकी लीला वे ही जाने! आज तक बाबा जी को कोई नही समझ पाया.. ! धन्य-धन्य है संत महापुरुष !

अहिंसा परमो धर्म

एक समय युगपुरुष गुरुदेव सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज खेबरन गाँव में एक आश्रम (टीकाणा) पहुँचे ! वहाँ के भक्तों ने स्वामी जी को बताया कि - स्वामी जी ! यहाँ आश्रम (मंदिर) पर उत्सवों पर बकरों की बलि चढाई जाती है ! अनेक मूक प्राणियों का वध (हिंसा) होता है ! उन्होनें स्वामी जी से आग्रह किया कि यहाँ पशु बलि बन्द करवाई जाये ! जिससे सैंकडों निरीह पशुओं का वध होने से बचाव हो जायेगा !'

तब दूसरे दिन सनातन धर्ममूर्ति '**श्री गुरुदेव भगवान**' ने सत्संग के माध्यम से धर्म-शास्त्रों का उपदेश देते हुए समझाया:-

अन्य क्षेत्रे कृतं पापं पुण्य क्षेत्रे विनिश्यति ।
पुण्य क्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति ।।

अन्यत्र स्थानों पर किया हुआ पाप पवित्र स्थानो पर मिटता है परन्तु पवित्र स्थानो पर किया हुआ पाप '**वज्र लेप**' के समान कभी न मिटने वाला होता है ! मुनि वेदव्यास जी ने भी कहा :-

अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम् ।
परोपकाराय पुण्याय पापाय पर पीड़नम् ।।

मुनि ने १८ पुराण लिखे हैं परन्तु दो ही बातें मुख्य रूप से कही है ! 'परोपकार' ही सबसे बड़ा पुण्य है और मन कर्म वचन से 'दूसरे को दुःख देना' हिंसा करना ही सबसे बड़ा पाप है ! स्वामी जी के सत्संग से सभी बड़े प्रभावित हुए !

तब स्वामी जी ने सभी से प्रतिज्ञा दिलवाई कि आज से हम कभी भी कहीं भी किसी पशु की बलि नहीं चढ़ायेगे और न माँसाहारी (तामसी) भोजन का आहार करेगें ! श्री गुरु महाराज जी के भजन - उपदेश का प्रेमियों पर गहरा असर पड़ा!

भक्तो ने प्रतिज्ञा कर कहा- आज से हम किसी भी स्थान पर न बलि चढायेगें और न ही माँसाहार का उपयोग करेगें... यह सुनकर सभी प्रसनचित हुए !

अहिंसा कायरता की निशानि नही वरन् यह तो बहादुरी का हथियार है !

Non & violence is not be used ever as the shield of the coward - It is weapon of the Brave -"

तपस्वियों- योगियों के आगे हिंसक प्राणी- मनुष्य पशु- पक्षी भी वैर विरोध छोड़कर अहिंसक बन जाते है ! स्वामी जी जब जंगलो में तपस्या करने जाते थे ! तब उनके तेज- तपोबल के प्रभाव से एक- दूसरे के विपरीत हिंसक पशु भी आपस में वैर हिंसा नहीं करते थे !'

हिंसा करके पशुओं को खाना ! ये समस्त बीमारियों की जड़ है ! अतः कभी भी मासाहार का सेवन नही करना चाहिए !

यदि सभी लोग अहिंसा को अपना लें तो उनके जीवन से कष्ट-बाधाओं और पीड़ाओ का अन्त हो जायेगा ! सभी सुखमय जीवन व्यतीत कर सकेगें ! अहिंसा मानव का सबसे बड़ा धर्म है ! इसमें कोई सन्देह नही है !

इस प्रकार स्वामी जी का जीवन भी अहिंसा रूपी दिव्य गुण से आलोकित रहा ! जगह- जगह अहिंसा का पाठ पढ़ाकर सभी को सत्यता का बोध करवाया... !

अहिंसा के पुजारी श्री गुरुदेव भगवान को कोटि-कोटि वन्दन !

नागदेवता भी हमारा भक्त हैं

युगपुरुष महायोगी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के तप-बल के प्रभाव से उनकी तपस्थली **"श्री अमरापुर दरबार"** टण्डोआदम (सिन्ध) में पेड़-पौधे जीव-जन्तु भी उनकी आज्ञा में रहते थे !

ऐसे ही एक समय **"श्री गुरु महाराज जी"** के सत्संग में एक नागदेवता भी नित्य प्रति आकर एक कोने में बैठकर सत्संग-श्रवण करता था ! किसी को कुछ नहीं करता था ! फिर भी सत्संगी - सेवकों को भय लगा रहता था ! कहीं हमें डस ना ले ! जो कि स्वाभाविक भी था !

एक दिन कुछ संत- सेवादारी **"आचार्य श्री"** के पास आये और कहा- स्वामी जी ! एक नाग देवता (सर्प) प्रतिदिन आपके सत्संग के समय पर यहाँ आकर बैठ जाता है ! जिससे सत्संग में सबको भय लगता है ! उसका क्या करें..?? इसे मारे... या अन्य कोई उपाय..??. आप जो आज्ञा करें ! इससे नाग देवता (सर्प) से सबको बड़ा डर-भय लगता है !

मुकप्रणियो के रक्षक **"श्री गुरूदेव भगवान"** ने कहा- न बाबा न ! ये भी प्रभु- परमात्मा की संतान हैं ! जैसे हम जीव है वैसे ही ये भी परमात्मा के जीव है ! जीव की हत्या करना महापाप है !

बिना कारण किसी भी जीव को मारना नहीं चाहिए ! वे भी बिना कारण किसी को दुःख नही देते ! आप इस सर्प को कुछ मत करो ! ये हमारा भक्त हैं ! ये सत्संग सुनकर अपना उद्धार करना चाहता है! फिर भी कोई बात नही ! हम इन्हें कह देते है !

''जीव किसको ना दुखाओ- दया सब पर कीजिए''

तब **''स्वामी जी''** उस नाग देवता के पास गए और कहा- अरे, नागदेवता ! आप यहाँ नहीं आया करो ! आपको देखकर संत- सेवादारी भयभीत हो जाते हैं ! आप बगीचे की ओर ही रहो ! आप चिंता ना करो ! आपका भी कल्याण हो जाएगा ! इतना सुनकर नाग देवता प्रसन्न हो गये ! बस- फिर क्या था वह नाग देवता स्वामी जी को नत - मस्तक होकर प्रणाम करके जंगल मे चला गया और फिर कभी किसी को नजर नहीं आया... ! ऐसे थे- मूक प्राणियों के रक्षक सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज...! धन्य- धन्य है ऐसे संत - महापुरुष !

कंडी वृक्ष ने छोड़े कांटे

युगपुरुष सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को प्रकृति से विशेष लगाव था ! सृष्टि के हर एक पेड़, पौधे, वनस्पति से स्नेह-प्रेम किया करते थे ! बिना कारण प्रकृति की किसी भी वस्तु को नुकसान नहीं पहुँचने देते थे !

ऐसे ही एक समय युगद्रष्टा स्वामी टेऊँराम जी महाराज से किसी सेवाधारी ने कहा - हे प्रभु ! दीनानाथ ! भक्त वत्सल ! ''**श्री अमरापुर दरबार**'' पर लगे हुए इस ''**कंडी के वृक्ष**'' को कटवा दें ! क्योंकि आने- जाने वाले भक्तों व सेवाधारियों को इस ''**वृक्ष**'' के कांटे बहुत चुभते हैं ! साथ ही आंधी तूफान आने पर इसके कांटे चारों ओर बिखर जाते है ! जिसके कारण सभी संत- सेवादरियो को बड़ी पीड़ा पहुँचती हैं ! फिर भी जैसी आपकी आज्ञा हो.. !

स्वामी जी ने कहा - वृक्ष- पेड़- पौधे प्रकृति की अनमोल धरोहर है ! इसे काटना नही चाहिए ! इससे तो हमें छाया व शुध्द हवा मिलती है ! इसके नीचे बैठकर भजन- ध्यान- स्मरण में सभी भक्तो का मन लगता है ! आप इसे काटो नहीं, हम वृक्ष देवता से कह देते है ! आगे से ये कांटे न बिखेरे' ! कौन समझे संत

महात्माओं की रहस्यमयी लीलाओं को ! बस - कह दिया **''वृक्ष देवता''** को आज के बाद कांटे नही बरसाना.. !

महापुरुषों की वाणी सत्य व सार्थक हुई ! भक्ति में होती हैं अद्भुत शक्ति ! जो एक बार कह दिया वह अटल सत्य ! उस दिन के बाद कंडी वृक्ष ने हमेशा- हमेशा के लिये अपने कांटे बरसाने बंद कर दिये...

कंडी ने कांटे तजे, गुरु का सुन उपदेश ।
मीठी वाणी बोलिये, सतगुरु का संदेश ।।

स्वामी जी के वचनो में थी अनन्त शक्ति...जिसके प्रताप से **''कंडी वृक्ष''** ने कांटे बरसाने बंद कर दिए !

भोले-भाले बहरे भक्त के उपर कृपा

संत-महापुरुषों के लिए कोई अपना या पराया नहीं होता ! सभी को समान रूप से अपना लेते हैं ! फिर चाहे वह गरीब हो अमीर हो या फिर सीधा- सादा मूक बधिर या सूरश्याम ! सब एक समान ! सबके उपर अनन्य कृपा की वर्षा करते रहते हैं !

ऐसे ही "**श्री अमरापुर दरबार**" सिन्ध- टण्डाआदम में एक '**नामदेव**' नामक भोला-भाला बहेरा भक्त रहता था ! बिचारा सुनता नहीं था पर स्वामी जी का प्यारा था ! यथा शक्ति अनुसार आश्रम की खूब तन- मन से सेवा भी किया करता था !

एक दिन उस भक्त के शरीर में कोई तकलीफ बढ़ गई ! यह बात स्वामी जी को पता चली ! तब स्वामी जी ने खियाराम से कहा- इसे हकीम मंघरराम के पास ले जाओ और दिखा कर आओ..? क्या तकलीफ है .?? हकीम ने अच्छे से देखकर दो दिन के ३-३ डोज औषधी के दिये!

फिर आश्रम पर पुनः आकर विश्राम किया ! अब भोले भक्त ने सोचा- तकलीफ ज्यादा हैं ! बार-बार दवाई (औषधी) लेने से अच्छा है - क्यों ना सब एक साथ ही ले लूँ ! तो जल्दी ठीक हो जाऊँगा ! तब उसने सारी दवाई एक साथ ले ली ! ऐसा करने से उसका स्वास्थ्य ओर ज्यादा बिगड़ गया ! स्वामी जी को यह सारा

समाचार किसी संत आकर सुनाया कि- भोले भक्त ''नामदेव'' ने दो दिन की पुरी दवाई (औषधी) एक साथ खा ली हैं ! जिससे उसका स्वास्थ्य ओर अधिक बिगड़ गया है !

स्वामी जी उसके भोलेपन से परिचित थे ! तब स्वामी जी ने कुछ कहा नहीं ! उसके पास आकर बड़े प्यार से ''कृपा दृष्टि'' का सर पर अपना व्रहद हस्त रखा और आशीर्वाद देकर कहा- इस भक्त को कुछ नही होगा ! महापुरुषों की कृपा हो गयी ! बस-देखते ही देखते वह **'नामदेव भक्त'** एकदम स्वस्थ हो गया ! जैसे कुछ हुआ ही न हो !

स्वामी जी ने ऐसे अनेक मूक बधिर, बहरे, सूरश्याम आदि को अपनी शरणागत देकर सभी का कल्याण किया ! धन्य- धन्य है ऐसे दिव्य महापुरुष... कोटि- कोटि वन्दन...-

घर की लक्ष्मी होती है-बेटी व कन्याएँ

हर घर में बेटी का होना बहुत जरूरी है ! जिस घर में कन्या होती है ! उस घर में ''मां लक्ष्मी देवी'' सदैव निवास करती हैं ! अनेक समाजों में कुप्रथा ''कन्या भ्रूण'' हत्याएँ पढ़नें-सुनने को मिलती हैं ! जो देश के लिए अभिशप्त प्रथा ही हैं ! इसका बंद होना अनिवार्य है ! संत-महात्मा भी इस पुण्यकार्य के अभियान में अग्रसर है ! जिससे ये कुप्रथा शीघ्र बन्द हो सके !

एक समय धर्म रक्षक सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज **''श्री अमरापुर दरबार - टण्डाआदम''** में भक्ति-ज्ञान-कर्म के साथ-साथ पुत्री (कन्या) के विषय में सत्संग-प्रवचन कर रहे थे ! जिस घर में कन्या होती है ! वहाँ सुख- शान्ति बनी रहती है ! वहाँ लक्ष्मी जी का वास होता है! घर में पुत्र भले ही हो, लेकिन पुत्री (कन्या) का होना भी बहुत जरूरी है! वह घर की शोभा होती है !

शास्त्रों में बताया गया है कि जिस घर में नारी का सम्मान होता है ! वह कुल दिव्य गुणों से सम्पन्न होता है ! वहाँ देवता निवास करते हैं ! सदैव घर परिवार मे खुशयाली व आनंद बना रहता है!

उसी सत्संग में स्वामी जी के भक्त **''श्री आवतराम''** का पूरा परिवार भी आया हुआ था ! वह सत्संग के पश्चात् स्वामी जी को दण्डवत् प्रणाम कर हाथ जोड़कर प्रार्थना करके कहने लगा - हे

प्रभु ! हे दयानिधान ! मेरे घर- परिवार में अपके आशीर्वाद से पुत्र तो हैं ! लेकिन एक भी पुत्री (कन्या) नहीं है ! अब आप ही कृपा करे ! जिससे मेरे घर में भी पुत्री (कन्या) का आगमन हो ! हमारा परिवार भी कन्या से खुशहाल हो !'

तब स्वामी जी ने आशीर्वाद देते हुए कहा- वत्स ! वहाँ हमारी **''माता श्री''(माता कृष्णा देवी जी)** बैठी है ! उनको प्रार्थना करें एवं उनका भी आशीर्वाद ले... परमात्मा- ईश्वर सब भली करेंगे ! भगवान के द्वार से कोई खाली नही जाता ! तुम्हारी प्रार्थना भी अवश्य ही सुनेंगे !

यह स्वामी जी का सारा समाचार श्री आवतराम जी ने **''माता कृष्णा देवी जी''**को सुनाया ! तब माता ने उन्हें **''कन्या रत्न''** प्राप्ति का आशीर्वाद दिया और कहा- सबकी सेवा करते रहना ! बड़ो का सम्मान करना ! प्रभु परमात्मा कृपा करेंगे ! समय पाकर उनके घर परिवार में ''पुत्री-रत्न'' की प्राप्ति हुई ! तब आवतराम बहुत प्रसन्न हुआ ! उस कन्या का नाम **''मोहिनी''** रखा गया !

कब - कहाँ और कैसे कृपा कर दे संत महापुरुष ! कुछ कह नही सकत ! धन्य- धन्य है ऐसे- अलौकिक महापुरुष !

अतिथि देवो भवः

योगीपुरुष सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज में निर्मानता के साथ- साथ सेवा का भी विशेष गुण था ! सेवा कार्य में कभी भी पीछे नही हटते थे ! कितनी पद- प्रतिष्ठा प्राप्त हो जाने पर भी कभी सेवा से पीछे नहीं हटते थे ! ऐसा उनके जीवन काल में अनेको बार देखा गया ! स्वामी जी में कथनी के साथ- साथ करनी भी विद्यमान थी !

एक समय की बात हैं- दोपहर का समय था ! कुछ 'अतिथि' स्वामी टेऊँराम जी महाराज का दर्शन व सतसंग श्रवण करने के लिए **'श्री अमरापुर आश्रम'** पर आये ! वे स्वामी जी से परिचित नहीं थे ! उनका नाम- यश- कीर्ति सुनकर ही दर्शन करने के लिए आये थे !

उस समय सभी संत-सेवादारी विश्राम कर रहे थे ! केवल स्वामी जी ही जाग रहे थे ! वे स्वामी जी से मिले और पूछा- स्वामी टेऊँराम जी महाराज कहाँ हैं.. ? हम सब उनके दर्शनों के लिए बहुत दूर से आये हैं !

दूर से प्रेमी दर्शन खातिर, अमरापुर में आये ।
दो बजे थे दिन के सोये, संत सभी सुख पाये ।
श्री आप ही महमायी, दीया टुकड़ा पिलाया पानी ।।

तब स्वामी जी ने कहा- पहले आप सभी भोजन-प्रसाद ग्रहण करो ! विश्राम कर लो ! शाम को उनका दर्शन कर लेना ! उस समय स्वंय स्वामी जी ने अपने हाथो से साफ-सफाई कर भोजन खिलाया ! जल पिलाया और आराम के लिए स्थान आदि दिया !

दूसरों को उपदेश करना कितना सरल होता हैं किन्तु स्वयं उस पर चलना बड़ा कठिन ! परन्तु स्वामी जी में **''कथनी और करनी''** एक समान थी !

सांयकाल जब अतिथि स्वामी जी के दर्शन करने पहुचे तो देखकर हैरान हो गए ! अरे ! इन महापुरुषों ने ही तो दोपहर को हमारी सेवा की थी ! भोजन खिलाया ! जल पिलाया और आसन दिया था !

ऐसे निर्मानी संत- महापुरुष के दर्शन करके हम तो धन्य-धन्य हो गए.... हमारा जीवन सफल और सार्थक हो गया... !

शत् - शत् नमन ! कोटि - कोटि वन्दन !

युक्ति से मिलती हैं मुक्ति

संत-महात्माओं के पास पारमार्थिक के साथ-साथ अनेक व्यवहारिक युक्तियाँ भी होती है ! कोई भी जीव किसी भी उलझन में पड़ जाये तो महापुरुष उसे सहजता से दूर कर देते हैं !

एक समय युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज परमात्मा की अलौकिक मस्ती में खेत-खलिहानों में भ्रमण कर रहे थे ! सभी मजदूर खेतिहर- किसान स्वामी जी का दर्शन करके प्रसन्नचित्त हो रहें थे ! तब एक किसान स्वामी जी के पास आया और कहने लगा- स्वामी जी ! एक हाथ में एक ही खरबूज आ सकता है ! दो हाथ हैं तो दो ही खरबूज हाथ में आयेंगे ! स्वामी जी मंद-मंद मुस्कुरा रहे थे ! स्वामी जी ने कहा- हम तो एक हाथ में बहुत से खरबूज उठा सकते हैं ! यह सुनकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ ! उत्सुकता से पूछने लगे ! स्वामी जी ! कैसे-कैसे..?

महापुरुषों के पास बहुत सी युक्तियाँ होती हैं ! उसी खेत-खलियान में एक खरबूज की लम्बी बेल दिख रही थी ! स्वामी जी ने पूरी बेल को हाथ में उठा लिया ! उसमें अनेक खरबूज लगे हुए थे ! देखों - हमनें बहुत सारे खरबूज एक ही हाथ में उठा लिये... ! यह देखकर सभी किसान भाई प्रसन्नचित्त हुए ! तभी कहा गया है -

जीवन मुक्ती संतजन,

दिल के बड़े उदार ।

कह टेऊँ व्यवहार में,

होवत सदा बाहर ।।

महापुरुषों के पास अध्यात्म के साथ - साथ ऐसी अनेक युक्तियाँ भी होती हैं ! युक्ति से ही मुक्ति मिलती हैं ! महापुरुषों की चरण-शरण में रहकर लोक-परलोक दोनों ही सँवर जाते हैं ! महापुरुषों की छोटी-छोटी बातों में रहस्य होता है ! गूढ़ ज्ञान भरा होता हैं ! जिसको समझने से हमें परम पद प्राप्ति होती हैं ! हमे संतो व उनकी वाणी को समझने का प्रयास करना चाहिए ! तब हमारा जीवन सार्थक व सफल हो जाएगा ! धन्य- धन्य है ऐसे संत-महापुरुष... जो जीवों का कल्याण करते है !

नाम रुपी टिकट करती है-भव सागर से पार

टेऊँ नौका नाम की, करणधार गुरु होय ।
बिन श्रम भव सिन्धु से, पार जात सब कोय ।।

सद्गुरु अपने भक्तों को नाम रूपी टिकट देकर भवसागर से पार लगाते हैं ! परलोक मे ‘‘**नाम रूपी टिकट**’’ ही काम आती है!

एक समय युगपुरुष सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज- ‘‘**श्री अमरापुर दरबार**’’ पर बैठे थे ! वहाँ एक प्रेमी प्रसाद लेकर व दंडवत प्रणाम करके स्वामी जी के पास बैठ गया ! स्वामी जी ने उन्हें ‘‘**ढोढो-चटनी प्रसाद**’’ खिलाया !

तब कुछ समय पश्चात स्वामी जी ने उस प्रेमी से बड़े ही स्नेह और वात्सल्य भाव से पूछा- अरे-बाबा ! कैसे हैं..? खुश प्रसन्न हो ना..? बतलाइए तो कहाँ रहते हैं.. ? कैसे आना हुआ.. ?? इतना पूछते ही उस प्रेमी की आँखे जल से छलछला उठीं और रो-रोकर स्वामी जी से कहने लगा - हे भगवन् ! मैं आपके चरणों का दास हूँ ! चैत्र मेले के अवसर पर आप से ही ‘‘नामदान’’ लिया था ! उसमे मुझे शंका हो गयी है कि आप हमें यहाँ ही इस संसार में नहीं पहचान पा नही रहे है, तो परलोक में जब हमसे पूछताछ होगी! तब वहाँ आप हमें कैसे पहचान कर भव से पार करेंगे.. ?

स्वामी जी उस भक्त की बात सुनकर मंद-मंद मुस्कराने लगे

और कहा- अरे- बाबा ! आप किसी प्रकार की चिन्ता न करें ! जो **''गुरु मंत्र''** आपको मिला है ! उसे ही पक्की तरह याद करो ! वह **''नाम रूपी टिकट''** आपको भव सागर से पार करेगा !

अमृत वेले ऊठ के, छोड़ कल्पना काम ।
कह टेऊँ हरि ध्यान धर, सुमरो गुरु का नाम ।।

वहाँ हमारे पहचानने की जरूरत नहीं है ! जैसे कोई अमुक व्यक्ति यहाँ से अमदाबाद या हरिद्वार जाएगा तो व्यक्ति को ट्रेन में (टी.टी.ई.) को केवल टिकिट ही दिखाना पड़ता है ! वह टी.टी.ई ऐसे नहीं पूछेगा कि आपकी जाति क्या है ? आप काम क्या करते हो.. ? टिकिट किससे ली है..? उसे तो केवल 'टिकिट' ही दिखाना पड़ता है !

उसी प्रकार से जिन जिज्ञासुओं ने पूर्ण **'श्री गुरुदेव भगवान'** से मन्त्र रूपी पास या टिकिट लिया है ! वे बिना रूकावट के ब्रह्मलोक **'श्री अमरलोक धाम'** में जाकर पहुँचते है ! उनके मार्ग में जहां भी उनसे पूछताछ होती है ! वहाँ सतगुरु के नाम का पास (टिकिट) दिखाते हैं ! हमने भी आपको **'नाम रूपी पास'** दे दी हैं ! उसका सतत् अभ्यास कर पूर्ण पद की प्राप्ति हो जायेगी !

वह प्रेमी **'सतगुरु महाराज जी'** के श्रीमुख से ऐसे मधुर यथार्थ वचन सुनकर अत्यंत आनन्दित हुआ और उसके मन की सारी शंकाएँ मिट गई ! सद्‌गुरु का नाम की कल्याण का मार्ग है ! ऐसे श्रीगुरुदेव के शरण मे जाने से जीवों का कल्याण अवश्य ही होता है !

कुआँ जल से लबालब भर गया ...

कूप नीर जब चुक गया, भक्तनि करी पुकार ।
सत्गुरु छींटा मार तब, प्रकट करी जल धार ।।

एक समय की बात हैं- **"श्री अमरापुर दरबार (डिब)"** पर विशाल चैत्र मेले का अवसर था ! एक ओर भजन ज्ञान-गंगा प्रवाहित हो रही थी, तो दूसरी ओर भोजन-भण्डार खुला था ! भक्तों की भीड़ का आलम भी बेहिसाब था ! सभी संत-भक्त अपनी-अपनी सेवाओं में तत्पर थे ! श्री गुरु दरबार की जल सम्बन्धी जरूरतों के लिए परिसर में एक बडा कुआ बना हुआ था और इसी के जल से भोजन-भण्डारा भी तैयार हो रहा था कि अचानक कुएँ का पानी समाप्त हो गया !

तब भण्डारी मंघरराम और सभी संत-सेवादारी घबराते हुए **"युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज"** के पास आए और प्रार्थना करने लगे- हे प्रभु ! दीननाथ ! कृपा करों ! कुएँ से जल नहीं आ रहा है ! बिना जल के इतने सारे भक्तजनों के लिए भोजन-भण्डारा कैसे तैयार होगा..?? प्रभु ! अब आप ही कृपा करो ! कुछ करो! जिससे जल की व्यवस्था हो सके ।

उस समय स्वामी जी अपनी अवधूती मौज में बैठे थे और

सारा वृतान्त सुनकर उठ खड़े हुए ! बोले- चलो कुएं के पास ! हम जल देवता से प्रार्थना करते हैं !

स्वामी जी कुछ संतो के साथ उस कुएँ के पास आए और जल के देवता वरुणदेव से प्रार्थना करके "**सतनाम साक्षी**" महामंत्र २-३ बार अभिमंत्रित कर चिप्पी से जल का छींटा कुएँ में डाला... ये कैसी लीला..? कुछ क्षण बाद ही उपस्थित सभी संत - भक्तजन क्या देखते हैं कि कुएँ में से जल के गड़गड़ की आवाज आने लगी और देखते ही देखते कुँआ ऊपर तक "जल" से लबालब भर गया ! यह आश्चर्यजनक शक्ति देखकर सभी संत - सेवादारी विस्मित हो उठे ! अगले ही क्षण उनके मुख से निकला - धनगुरु टेऊँराम..... धनगुरु टेऊँराम....'

पाँच सौ से भी अधिक भक्तों ने खाया भोजन भण्डारा ...

एक समय की बात है- सत्संग स्थल पर सत्संग के पश्चात् महाराज श्री ने अपनी अवधूती फकीरी की मौज में आकर उपस्थित सैकडों की संख्या में संगत को भोजन- भण्डारा खाकर ही फिर घर पर जाने को कहा - **'श्री गुरु महाराज जी'** ने कहा - जो भी इस भण्डारे से खाकर जायेगा ! वह ईश्वर की दया से सदा भरपेट संतुष्ट रहेगा !

यह सुनकर सारी संगत बड़ी पंगत (भोजन पाने के लिए पंक्तिबद्ध आदमी) लगाई गईं !

जहाँ कार्यक्रम था वहाँ का प्रेमी घबराकर स्वामी ग्वाललाल जी से इस बात की चर्चा की ! भोजन तो चालीस - पचास लोगों का है और यहाँ पाँच सौ से अधिक लोग..? अब कैसे क्या होगा.. ? स्वामी ग्वाललाल जी ने पूरी बात 'सद्गुरु महाराज जी' को सुनाई ! विश्वम्भर सद्गुरु महाराज जी ने कहा- आप किसी बात की चिन्ता न करें ! भगवान सब अच्छा ही करेगें ! हमारे मुख से भगवान ने कहलवाया है तो पूरा भी वही करेंगे ! महापुरुष द्वारा कहा गया वचन अटल सत्य होता है !

तब श्री सद्गुरु महाराज जी भण्डारे (भोजनालय) में आये और अपने चिप्पी (कमण्डल) से छींटा लगाकर... उस पर अपनी चद्दर डाल दी और बोले - अब चलाओ ! भोजन भण्डारा.. क्या देखते है भोजन समाप्त ही नहीं हुआ ! सब लोग भोजन पाकर बड़े प्रसन्न हुए ! यहाँ तक कि बाहर खड़े फकीरों और जीव-जन्तुओं को भी भोजन दिया गया ! इतना कम भोजन... कैसे खाया इतने सारे लोगो ने..? उसकी लीला वे ही जानें..! स्वामी जी की लीला को आज तक कोई नहीं समझ पाया ! कहा जाता है कि स्वामी जी को अन्नपूर्णा का वरदान प्राप्त था ! ऐसी लीला अनेको बार देखी गयी !

ऐसी आश्चर्य जनक शक्ति देखकर सभी भक्त **''श्री गुरुदेव भगवान''** की जय-जयकार करने लगे !

कृपा निधान संत महापुरुष

एक समय युगपुरुष सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत मण्डली के साथ कहीं जा रहे थे !

उसी मार्ग में एक सूरदास भिखारी बालक दिखाई दिया ! वह बालक बड़े ही मीठे स्वर में भजन की पंक्तियाँ गाकर भीख माँग रहा था ! युगपुरूष स्वामी जी ने उसे देखा !

स्वामी जी उस बालक के पास गये ! सिर पर हाथ रखकर बड़े दुलार- प्यार से पूछा - बेटा ! यह भीख माँगने का तुच्छ कार्य क्यों कर रहे हो..? बालक ने करुण स्वर में कहा- बाबा जी ! रोटी खाने के लिये.. ! अगर ऐसा कार्य नहीं करूँगा... तो घर वाले मुझे भोजन (रोटी) नहीं देंगे!

ये सुनकर स्वामी जी का दिल पसीज गया और उस बालक के ऊपर दया आ गई ! महापुरुष तो कृपा निधान, दया के सागर होते हैं..... उनसे किसी का दुःख- दर्द देखा नहीं जाता ! तब स्वामी जी ने कहा- अरे बेटे ! केवल रोटी के लिए ये भीख मांगने जैसा हल्का (तुच्छ) काम कर रहे हो ! चलो- हमारे साथ आश्रम पर.... वहाँ सेवा करो, भजन करो और भरपूर भोजन- प्रसाद पाओ.... इतना सुनकर बालक प्रसन्न हो गया और प्रणाम करके स्वामी जी के साथ आश्रम पर आ गया !

बालक के सूरदास होने के कारण किसी संत- सेवाधारी ने स्वामी जी से कहा- महाराज जी ! आप इस सूरश्याम को क्यों लाये है.. ?? कौन इसका ध्यान रखेगा..? कौन इसकी सेवा करेगा..??

तब करूणा निधान स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने कहा- सभी में प्रभु- परमात्मा निवास करते है ! हम सब उसी की संतान है! इस बालक की सेवा 'हम' स्वयं करेंगे और इसका ध्यान भी रखेंगे ! ऐसा सुनकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ ! सभी शर्मिंदा हो गए ! देखो ..... दिव्य महापुरुषों की करूणा, कृपा, निर्मानता कितना स्नेह और कितना दुलार....!

कहते है - कि स्वामी जी की उस बालक के ऊपर इतनी अनन्य कृपा हुई कि वह 'सूरदास बालक' आगे चलकर एक पारन्गत गायक (गवैया) बन गया और जीवन भर 'गुरु आश्रम' की खूब तन- मन से सेवा करता रहा... नित्य नये- नये भजन गाकर **'सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** को सुनाता रहा ! ऐसी होती है- महापुरुषों की अलौकिक विलक्षण कृपा... धन्य- धन्य ऐसे कृपानिधान संत महापुरुष... !

भक्त की सुनी पुकार-आए गुरु गमटार

कित सद्‌गुरु कित दीन मैं, छोले बेचनहार ।

सुन पुकार मण्डली बिना, आये गुरु गमटार ।।

भक्त वत्सल सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की अनेक लीलाओं में यह '**भक्त और भगवान**' की अनन्य अनोखी लीला भी देखने को मिलती है !

ऐसे ही स्वामी जी का एक सीधा-सादा भक्त था ! वह स्वामी जी के प्रति अनन्य भक्ति-भाव रखता था ! साथ ही नित्य प्रति स्वामी जी के दर्शन करके गाँव-गाँव छोले बेचकर अपने परिवार का पालन-पोषण करता था !

एक दिन सायंकाल के समय वह किसी क्षेत्र में छोले बेच रहा था ! उसके पास थोड़े ही छोले बचे थे ! अकस्मात् वहाँ से स्वामी जी ३०-३५ संत-महात्मा और भक्तजनों के साथ अन्यत्र स्थान पर जा रहे थे ! स्वामी जी को देखकर वह भक्त बड़ा गद्-गद् हुआ और मन ही मन में भाव जाग्रत हुआ कि स्वामी जी मेरे छोले खायें ! फिर मन में विचार आया कि - अरे ! स्वामी जी की मण्डली तो बहुत बड़ी है ! मेरे पास इतनें छोले नहीं है कि मैं सबको छोले खिला सकूँ ! वह सोच में पड़ गया कि- अब मैं क्या करूँ..??

मन-ही-मन स्वामी जी से छोले स्वीकार करने की प्रार्थना करने लगा ! अन्तर्यामी सद्गुरु महाराज ने उस भक्त कि पुकार सुन ली और चलते-चलते अचानक रुक गए ! एक-दो संतों को साथ रोककर अन्य सभी संतों और सेवाधारियों से कहा कि- आप सभी चलो! हम कुछ देर में आते हैं !

वह भक्त आँखें बंद करके प्रार्थना कर ही रहा था कि स्वामी जी उसके पास पहुँच गए ! स्वामी जी ने बड़े ही प्रेम से कहा - 'अरे भक्त! हमें बहुत भूख लगी है हमें भी छोले खिलाओ !' जैसे ही यह वचन सुनें..और उस भक्त ने आँखें खोली.. तो क्या देखता है- अरे ! श्री गुरु महाराज जी.. अचानक दर्शन कर आश्चर्यचकित हो गया ! उसकी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था... प्रेमाश्रु छलक पड़े ! शरीर पुलकित हो गया और वह बार-बार स्वामी जी को वन्दन कर रहा था ! उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था कि स्वामी जी मुझसे छोले माँग रहे हैं ! उसे समझ ही नही आ रहा था..? मैं छोले कैसे खिलाऊँ.. ?

'इक ही प्रेम प्रभु को भाया...'

आज उस भक्त की स्थिति भी वैसी ही थी - जैसे भगवान श्री राम जी भीलनी के यहाँ और श्री कृष्ण विदुर के यहाँ पहुँचे थे ! उनके बेर व केले के छिलके खाकर बड़े भाव विभोर हो गए थे ! वह समझ नहीं पा रहा था कैसे खिलाऊँ..? क्या करूँ..?

तब उस भक्त ने स्वामी जी को **''एक दोने में छोले''** बड़े प्रेमभाव से खिलाए ! उसका भाव देखकर स्वामी जी ने भी बड़े चाव से धीरे-धीरे छोले खाने लगे और भक्त भी स्वामी जी के इस अद्भुत लीला का दर्शन कर रहा था ! वह अनूठा दृश्य **''गुरु और भक्त''** का दर्शन करने जैसा था ! थोड़ी देर पश्चात् स्वामी जी उस भक्त को आशीर्वाद देकर आगे चले गए ! ऐसे थे- भक्त वत्सल भगवत् स्वरुप श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज... !

संत परम हितकारी

टण्डा आदम सिन्ध में स्थित-युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की-श्री अमरापुर दरबार ! जहाँ था चहुं ओर विशाल बाग- बगीचा ! सभी संत- सेवादारी करते थे गुरु आश्रम में अपनी-अपनी सेवा ! कोई कोठार, कोई भण्डारा, कोई संत सेवा, कोई खेती-बाड़ी तो कोई बाग-बगीचे की देखभाल में सेवारत रहते थे !

ऐसे ही सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की आज्ञा से संत अर्जुनदेव जी बाग- बगीचे की सेवा किया करते थे ! जिस बगीचे में अमरूद सेब केला, अनार अंगूर आम आदि फल-फूल लगे हुए थे ! संत जी दिन-रात लग्न के साथ बगीचे की देखभाल किया करते थे !

एक दिन संध्याकाल के समय एक गरीब उस बगीचे में आकर आम की गठरी बांधकर ले जाने लगा ! तभी संत अर्जुनदेव की दृष्टि उस गरीब पर पड़ी ! उसे पकड़ लिया और कहा चोरी करते हो..?? थोड़ा गुस्सा भी किया ! विचारा गरीब डर गया और क्षमा मांगने लगा ! थोड़ी देर बाद परम उदारी भक्त वत्सल **"स्वामी टेऊँराम जी महाराज"** भ्रमण करते हुए वहाँ आ पहुँचे ! सारा वृतान्त जानकर गरीब के सिर पर दुलार का हाथ घुमाया !

दया भाव रखकर उससे कहा- वत्स ! कोई बात नही ! तुम भी भगवान की सन्तान हो ! ये सब फल- फूल परमात्मा का है ! इन पर सभी प्राणियों का अधिकार है ! इसे हम सबको मिल-बांटकर खाना चाहिये ! आप कोई चिंता ना करो !

स्वामी जी ने संत अर्जुनदेव जी से कहा- आप इन्हें आम दे दो ! आम किसके लिये है..? इसे कौन खायेगा..? इसे आवश्यकता थी, तो इसने भगवान की वस्तु समझकर फल ले लिये.... इसमें क्रोध करने की कोई आवश्यकता नहीं ! इस विचारे की भी कोई मजबूरी रही होगी ! आज कोई काम नही मिला होगा ! अर्थात जितना मांगे इन्हें फल दे दो !

संत-महापुरुष तो सर्वगुण सम्पन्न, परम उदारी और अन्तर्यामी होते है ! स्वामी जी ने बड़े ही स्नेहयुक्त वचन बोलकर उस गरीब से कहा- आपको जितने फल चाहिए.... आप ले जाओ. .. ! आप किसी प्रकार की कोई चिंता ना करो... स्वामी जी उदारता व दयालुता को देखकर वह गरीब बड़ा प्रसन्न हुआ और ''श्री चरणों'' में प्रणाम करके चला गया' !

स्वामी जी की ऐसी दया कृपा को देखकर सभी संत-सेवाधारी बड़े प्रसन्नचित हुए ! बाबा जी ! आप धन्य- धन्य हो !

दीन दयालु-दुखहर्ता-कष्टनिवारक

यह बात युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जीवनकाल की है ! एक बार गाँव की पंचायत ने एक गरीब व्यक्ति को किसी कारणवश नाराज होकर गाँव से निकाली दे दी और उसका भोजन - पानी सब बंद कर दिया था ! जो भी घर या व्यक्ति उसे भोजन या पानी देगा तो उसे भी दण्ड स्वरुप गाँव से निकाली की सजा दी जायेगी ! वह गरीब व्यक्ति भूखा- प्यासा रोता-विलखता रहा पर किसी को उस पर दया न आई !

प्रातःकाल के समय "**श्री गुरुदेव जी**" परमात्मा के चिंतन में लीन थे ! तब उनके कानों में उस व्यक्ति का करूण रुदन स्वर सुनाई पड़ा ! भगवान के नाम पर मुझे कोई रोटी दे ! पानी पीला दे ! मुझे बहुत भूख-प्यास लगी है ! स्वामी जी तो करूणा के सागर थे ! उनसे किसी का दुःख- दर्द देखा नही जाता था और अगर कोई "ईश्वर" का नाम लेकर पुकारे तो फिर... वे रुक नही सकते थे ! जैसे ही यह सुना ! उसी समय घर में जो कुछ भोजन- पानी था ! वह लाकर दे दिया !'

स्वामी को ये "सेवा कार्य" करते हुए पंचायत के किसी व्यक्ति ने देख लिया और पंचायत को बता दिया ! फिर पंचायत भुलाई गई ! फिर पंचायत में स्वामी जी को बुलाकर- पूछा गया- आपने पंचायत की तरफ से दण्डित व्यक्ति को भोजन-पानी दिया.?

स्वामी जी कहा- इस गरीब ने ईश्वर के नाम पर भोजन माँगा तो मैंने ईश्वर के नाम पर इसको दिया है ! हमने ये देखा नहीं होगा !

इतना सुनकर पंचायत ने स्वामी जी को गाँव निकाली दे दी ! स्वामी जी तो परमात्मा की मस्ती में मस्त ! किसी से कुछ कहा नहीं और गाँव के बाहर रेत के टीले पर परमात्मा के भजन- साधना में तल्लीन हो गये ! भगवान के भक्त कभी किसी को कष्ट- दुःख नहीं देते और ना ही किसी से कुछ कहते है ! किन्तु भगवान के भक्तो को कोई कष्ट देता है तो यह बात परमात्मा से सहन नहीं होती !

भगवत अपने दास का,
निशदिन है रखवार ।
कह टेऊँ भूलत नहीं,
हरदम करत संभार ।।

अब यहाँ प्रभु की ऐसी लीला बनी कि पूरे गाँव में किसी रोग की महामारी हो गई ! उसके उपचार के लिये अनेक बड़े-बड़े हकीम-डॉक्टरो को बुलवाया गया पर कोई लाभ नही ! सबकी कोशिश असफल रही ! सभी गाँव का उपचार करके थक गए ! गांव पंचायत वाले बहुत चिंतित हो गए ! अब क्या किया जाये ! कोई रास्ता ही नही मिल रहा था !

तभी एक दिन पास ही के गाँव में एक सिद्ध महात्मा जी आये हुए थे ! गाँव व पंचायत वाले उनके श्री चरणों में गिरकर करूण स्वर में प्रार्थना करने लगे ! हे प्रभु ! हमारे गांव पर दया करो ! बीमारी से छुटकारा दिलाओ !

महात्मा जी उनकी प्रार्थना सुनकर बोले– आप लोगों ने जिन संतों को कष्ट दिया है ! वह अलौकिक महापुरुष है ! अवतारी संत है ! उनसे जाकर माफी माँगे तो ही दुःख दूर हो सकता है ! अन्यथा नही ! उन संतो ने आपसे कुछ नहीं कहा– परंतु परमात्मा अपने भक्त के कष्ट को देखकर नाराज हुए हैं ! अतः आप स्वामी जी के शरण में जाओ ! संत बड़े दयालु होते हैं ! वह आपको क्षमा अवश्य कर देंगे और इस विपत्ति को दूर करने का मार्ग भी बताएँगे !

सारे गाँव वाले स्वामी जी के पास आकर उनके **''श्री चरणों''** में गिर गये और करूण स्वर में अपनी भूल का पश्चात्ताप करने लगे ! दयासागर स्वामी जी ने उन्हें क्षमा करके कहा – आज के बाद कभी भी ऐसी सजा किसी को नही देना और सदैव गरीब – अनाथो की सेवा करना ! आगे परमात्मा सब भली करेंगे !'

फिर गाँव वालों की प्रार्थना सुनकर स्वामी जी ने कृपा बरसातें हुए पूरें गाँव में अपने **'श्रीचरण'** घुमायें.. और **'सतनाम साक्षी मंत्र'** अभिमंत्रित करके जल का छींटा डाला.... जिससे पूरा गाँव पवित्र हो गया और पूरे गांव की बीमारी दूर हो गई !

ऐसे थे – दुःखहर्ता, कष्ट निवारक योगी महापुरुष सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज..

परम उदारी - गरीब निवाज

एक समय की बात हैं ! श्री अमरापुर दरबार- टण्डेआदम- सिंध में वार्षिक चौत्र मेला लगा हुआ था ! वहाँ रेत (बालू) अत्यधिक हुआ करती थी ! क्योंकि वह दरबार **''रेत के टीले''** पर बनी हुई थी ! मेले में बहुत-से लोग आए हुए थे ! मेले के अवसर पर प्रतिदिन विशाल भण्डारे का भी आयोजन किया भी जा रहा था ! स्वामी जी की आज्ञा थी कि सभी प्रेम पूर्वक भण्डारा प्रसाद खाकर जाए ! कोई भी भूखा न जाय ! यदि कोई भोजन ले भी जाय तो उसे मना न किया जाय !

उस मेले में एक गरीब वृद्ध माता आयी थी ! जो की भूख-प्यास से बहुत व्याकुल थी! वह भी आकर भोजन करने लगी ! भोजन के पश्चात् जो भी बर्तन थाली, कटोरा, गिलास आदि था ! वह चुपचाप वही रेत में गड्ढा करके छुपा दिए! उसने विचार किया कि जब सभी लोग चले जायेंगे, फिर उसे निकालकर मैं घर ले जाऊँगी ! उसे ऐसा करते हुए एक संत- सेवादारी ने देख लिया और सारा वृत्तान्त स्वामी जी को आकर सुनाया! स्वामी जी करूणा के सागर थे ! उन्होंने सेवादारी से कहा - बेटा ! जो तुमने देखा - उस बात को यही तक रहने दो ! किसी से नही कहना ! वह माता जरूर अभावग्रस्त होगी ! तभी उसने ऐसा किया है ! आप जाओ - उस माता को यहाँ ले आओ !

दाता सो ना जानिये, धन का देवे दान !
कह टेऊँ दाता वही, सबको दे सन्मान !!

स्वामी जी की आज्ञा पाकर सेवादारी उस माता को लेकर आया ! माता भयभीत हो गयी ! मन ही मन मे बहुत डर लग रहा था कि स्वामी जी को सब पता चल गया है ! फिर प्रसन्न भी हो रही थी कि **''मैं कितनी भाग्यशाली हूँ- जो स्वयं स्वामी जी ने मुझे याद किया है !''** स्वामी जी ने माता को कुछ भी ना कहकर उसे करूणाभरी दृष्टि से देखकर कहा-माता ! आप यहाँ बैठिए ! फिर सेवादारी से कहा-जो माता ने बर्तन छुपाये है ! उन्हें यहाँ लेकर आओ ! सेवादारी वह सारे बर्तन लेकर आया !

स्वामी जी ने माता से कहा- माता ! ये लो तुम्हारा वाला थाली, कटोरा तथा गिलास ! इसी के साथ कुछ नये बर्तन भी ले जाओ ! घर - परिवार मे काम आएंगे ! मेले के उपलक्ष्य में मिठाई, बर्तन और एक कपड़े का जोड़ा भी हैं ! ये भी प्रसाद स्वरूप में ले जाओ ! वह गरीब माता स्वामी जी की उदारता देखकर बड़ी प्रसन्नचित हुई! खुशी का कोई ठिकाना नही रहा ! फिर स्वामी जी को प्रणाम करके चली गयी ! संतों का हृदय इतना विशाल होता है ! ऐसे थे - परम उदारी-गरीबनिवाज-युगद्रष्टा सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज !

सिध्द्वो के मेले में पशुओं की बलि रुकवाना

एक समय की बात हैं- जब अहिंसा के पुजारी सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज **"भिट्ट शाह"** शहर में ठहरे हुए थे ! उन दिनों में **"ठोढ़नि नामक गाँव"** में सिध्दों का बड़ा भारी मेला लगता था ! एक भक्त ने स्वामी टेऊँराम जी महाराज को बताया कि इस मेले में बहुत से पशुओं की बलि दी जाती है! ऐसा सुनकर स्वामी जी ३०- ३५ प्रेमियों को साथ लेकर उस मेले में पहुँचे- जहाँ सत्पुरूष पहले से ही भजन- सत्संग कर रहे थे !

वहाँ के महंत पुरसूराम जी ने स्वामी जी का बहुत आदर-सत्कार किया ! फिर उनके निवेदन पर स्वामी जी ने वहाँ सत्संग- प्रवचन किया ! स्वामी जी की वाणी में बड़ा ओज था ! जहाँ सत्संग- प्रवचन करतें थे ! वहाँ बड़ा असर होता था ! स्वामी जी ने सत्संग में बतलाया कि संसार में किसी भी जीव को पाप कर्म नहीं करना चाहिए ! पाप कर्म करने से यह जीव चौरासी के चक्कर में जाकर अनन्त दुःखों को प्राप्त करता है ! इसलिए जीवन में पाप कर्म कभी नहीं करना चाहिए ! इस धार्मिक मेले में हर महीने पशुओं की बलि दी जाती है ! ये अच्छी बात नही है कि यहाँ निर्दोष मूक प्राणियो की हत्या की जाये ! उसके पाप का भागीदार कौन होगा.?? देवी- देवताओं को कभी भी माँस- शराब आदि का भोग नहीं लगाना चाहिए ! यह तो सात्विक सत्पुरूषों का पवित्र स्थान व धार्मिक मेला है ! उनको ५६ भोग व षट्रस भोग लगाना चाहिए, न

कि तामसिक भोजन का ! धर्म-शास्त्र व पुराणों में ऐसे भोजन के लिए स्पष्ट मना किया गया है ! घर के पवित्र उत्सव, विवाह, यज्ञोपवीत, नामकरण संस्कार आदि में भी ऐसे निषिद्ध भोजन का उपयोग कभी नहीं करना चाहिए ! अज्ञानी जीव अपने माँस को अन्य जीवों के माँस से बढ़ाना चाहते है... ये गलत है! जैसा कि शास्त्रो में बतलाया गया है.. ! ये सब पाप के भागीदार होते है :-

१. उपदेश करने वाला (खाने की सलाह देने वाला)....

२. समर्थन करने वाला...

३. लाकर देने वाला....

४. काटने वाला....

५. पकाने वाला...

६. खाने वाला....

भगवान कहते है - **''जीव दया तो मम दया''** जो जीवो पर दया करते है- उसी पर भगवान की दया- कृपा होती है !

स्वामी जी ने अनेक दृष्टान्तों व प्रमाणों से समझाया- जिसे सुनकर वहाँ के ''महन्त श्री'' ने भी प्रतिज्ञा की - 'अब हम कभी भी इस पवित्र स्थान पर माँस का उपयोग नहीं करेंगे!' आज से यहाँ सिध्दों के उत्सव पर दाल व मीठे चावल का प्रसाद बाटेंगे ! फिर सभी प्रेमियों ने भी प्रतिज्ञा की- हम आज के बाद माँस-शराब आदि का उपयोग नहीं करेगे ! देवी- देवताओं पर बलि भी नहीं चढ़ाएँगे और न ही हिंसा करेगे ! ना होने देंगे! सभी प्रेमी आपस में कहने लगे कि इस वर्ष मेले में आना सफल हुआ...!

ऐसे थे-सनातन धर्म व मूक प्राणियों के रक्षक सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज... !

बालक खिल्लू को डूबने से बचाना

समय- समय पर प्रभु- परमात्मा संत- महात्मा के रूप में अवतरित होते है किन्तु हम मूढ़ अज्ञानी जीव उन्हें पहचान नहीं पाते !

लीलाधारी पुरूषोतम भगवान की अनन्त लीलाओं में **''युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज''** एक सिद्ध संत महापुरुष एवं भगवान के साक्षात् अवतार थे!

बाल्यावस्था में खिल्लू नामक बालक के डूबने से बचाने वाला प्रसंग किसे याद न होगा..? ये सभी प्रभु की विभिन्न अनन्त लीलाएँ थीं ! किन्तु देखा जाये तो स्वामी जी बाल समूहों के साथ सिन्धु नदी के पावन तट पर क्रीड़ा (रास) कर रहे थे ! जिस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण वृन्दावन में गोप-ग्वालों के साथ खेलते थे ! वैसे ही स्वामी जी ने भी अनेक लीलाएँ खण्डू गाँव में की थी !

बालरूप में स्वामी टेऊँराम जी की लीला का दृश्य भी अलोकिक था ! इस अद्भुत क्रीड़ा को देखने के लिए सभी देवी-देवता भी बालरूप बनकर उस रास में शामिल हो गए थे ! ऐसी मनोहारी मधुर लीला भला कौन देखना नहीं चाहेगा..? उनकी अलौकिक लीला को समझ पाना ! हमारी समझ से कोसों दूर हैं !

ऐसे ही एक समय भगवान वरूणदेव के मन में भी बालरूप

स्वामी टेऊँराम जी महाराज के दर्शनों की तीव्र उत्कंठा जाग्रत हुईं ! अब तो दोनों के मन ही मन एक दूसरे से मिलने व दर्शनों की इच्छा प्रबल होने लगी ! मानव रूप में प्रत्यक्ष दर्शन कराना उचित न समझा !

यहाँ अब दोनों महापुरुषों ने एक अद्भुत विचित्र लीला रची! "**खिल्लू नामक बालक**" जो उस भगवद् लीला में खेल का विशेष पात्र बनाया ! तब अचानक 'भगवान वरूणदेव जी' ने दर्शनों की लालसा से सिन्धु नदी का वेग बढ़ा लिया ! लहरें तेज कर दी और आगे बढ़ा दी ! बस - फिर जल की तेज धारा तट से बाहर निकाली और खिल्लू को अपने भीतर लेकर चली गयी ! जैसे ही खिल्लू नदी के अंदर गया ! बच्चों में हाहाकार मच गया ! सभी शोरगुल होकर चिल्लाने लगे ! चहुं ओर सन्नाटा ! सभी चिन्तित होने लगे ! अब क्या होगा..?? सभी बाल- गोपाल बहुत रोने-चिल्लाने लगे ! कौन समझे- स्वामी जी की इस अद्भुत बाल लीला को..? प्रियतम को प्रिय से मिलने की चाह थी तो ऐसी लीला करनी ही थी !

तब स्वामी जी अपने भक्त की रक्षा करने हेतु प्रसन्न मुद्रा में सिन्धु नदी के भीतर चले गए ! स्वामी के अन्दर जाते ही सिन्धु नदी का जल चहुं ओर प्रकाशमान हो गया ! अद्भुत तेजोमय ज्योति ! भगवान वरूणदेव जी प्रतीक्षारत खिल्लू को गोदी में लिये खड़े थे ! जैसे ही नदी के अंदर पहुचे तो बड़े प्रसन्नचित होकर दोनों एक

दूसरे को प्रेम भाव से निहारने लगे.. नयनों से नयन मिले अनोखा महासंगम - और नयनाभिराम प्रेम विह्वल भाव ! दोनो देवता एक दूसरे के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए प्रसन्न होने लगे ! प्रभु बड़े समय बाद दर्शन हुआ है ! कुछ समय ऐसे ही प्रेम - ज्ञान की वार्तालाप करके खिल्लू को स्वामी जी बाहर लेकर आ गए!

कहन लगे कुछ सेवा बताए, बोले खिल्लू लेन हम आए।

प्रसन्न हो तब दीन्ही विदाई, सद्गुरु ने मम जान बचाई।

धन्य धन्य गुरु टेऊँरामा, परम पवित्र तुम्हरा नामा।

ऐसी अद्भुत लीला को देखकर सभी खण्डूवासी बड़े आश्चर्यचकित हो गये ! सभी एक दूसरे को आश्चर्य से निहारने लगे ! प्रभु तुम धन्य हो ! कब कैसी लीला करते हैं ऐसे महापुरुष... हमारी समझ से बाहर ! खिल्लू के द्वारा दोनों महापुरुषों का प्रत्यक्ष रूप से दर्शन किया गया! सर्व प्रथम स्वामी जी ने यह लीला कर सभी को "**प्रभु सत्ता**" का भान करवाया ! उसी समय सभी को विश्वास हो गया कि स्वयं प्रभु परमात्मा ही हमारे "**खंडू गांव**" में अवतार लेकर आये है !

महापुरुषों को शत- शत नमन... कोटि- कोटि वन्दन

सेवा भी एक प्रकार की भक्ति है

युगपुरुष सतगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज प्रातःकाल शीघ्र उठकर सभी संत- महात्माओं एवं सेवादारियों को उठाकर पूरे आश्रम की साफ- सफाई सेवा कार्य करवाते थे ! फिर सभी से नाम- स्मरण का अभ्यास करवाते थे !

महापुरुष अध्यात्म के साथ- साथ स्वावलंबन की शिक्षा भी देते थे ! कभी- कभी तो स्वामी टेऊँराम जी महाराज ब्रह्ममुहूर्त में उठकर स्वयं ही आश्रम की साफ- सफाई सेवा कार्य कर देते थे ! प्रातःकाल उठकर संत- सेवादारी आश्चर्य से देखते..?? आज पूरे आश्रम की साफ-सफाई कैसे हो गयी..? किसने की..?

एक समय ऐसा हुआ कि श्री अमरापुर दरबार में **'चैत्र मेला'** चल रहा था ! बहुत भीड़ आयी हुई थीं ! चारों ओर कचरा ही कचरा ! जूते- चप्पल इधर-उधर बिखरे पड़े थे ! अनेक जूते- चप्पलों पर रेत गन्दगी लगी हुई थी !

कलयुग में प्रधान है, सेवा पुनि सत्संग ।
कह टेऊँ जिसके किये, होवे भाव दुःख भंग ।।

तब नियमानुसार ब्रह्मवेला में उठकर स्वामी टेऊँराम जी महाराज आश्रम की देखरेख कर रहे थे ! क्या देखा कि दरबार पर चहुँ ओर गंदगी कचरा पड़ा हुआ है ! उस समय स्वामी जी ने किसी

को ना उठाकर स्वयं ही आश्रम की पूरी साफ- सफाई कर दी ! साथ ही एक कपड़ा लेकर सभी संतों के जूते- चप्पलों को भी साफ करके अच्छी तरह से जमा कर रख दिए ! चाहते तो किसी संत-सेवादारी को उठा सकते थे, किन्तु - नहीं ! देखो- स्वामी जी में कितनी ना निष्कामता, निर्मानता व सेवा भाव का गुण था ! इतने बड़े योगी महापुरुष ! पर तुच्छ से तुच्छ सेवा कार्य से पीछे नहीं हटना.. कहना तो सरल होता है पर ऐसा तुच्छ कार्य करना बहुत ही कठिन ! **''कथनी व करनी''** किसी विरले ही महापुरुष में होती है !

ऐसे महापुरुष के पवित्र प्रेरणा प्रसंग सुनते है- तो हृदय द्रवित हो जाता है ! श्रद्धा से मस्तक झूक जाता है... ऐसे 'श्री गुरुदेव जी' को हमारा शत-शत नमन... !

बिन सावन बरस पड़ी-जमकर वर्षा

एक दिन ऋद्धि-सिद्धि के मालिक युगपुरुष **'सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** भक्ति रस की मस्ती में मस्त बैठे थे! सिद्ध महापुरुषों की अद्भुत लीला को कौन जान सकता है..? मध्यान्ह के समय भगवान भास्कर की प्रचंडता से तीव्र गर्मी हो रही थी ! तपती रेत और गर्म हवाओं से सभी व्याकुल हो रहें थे !

स्वामी जी ने संत मण्डली व भक्तों से कहा- "चलो ! अभी हमें एक भक्त के घर चलना हैं!" अभी इतनी गर्मी में..?सभी संत आश्चर्यचकित हो गए ! इतनी तीक्ष्ण गर्मी और लू की भरमार में कैसे चलेंगे..?? परन्तु सभी ने स्वामी जी की आज्ञा का पालन किया ! योगियों की तरह रमण करने महापुरुषों के लिए क्या धूप और क्या छाँव...! अपनी भक्ति की अलमस्ती !

श्री गुरुदेव भगवान पूरी मण्डली सहित गाते-बजाते... भक्ति सरोवर में डूबे.. उस भक्त के घर चलते चले जा रहे थे ! तभी पसीने से लथपथ और गर्मी-लू से बैचेन संतों और भक्तों ने स्वामी जी से विनम्र प्रार्थना कि- हे प्रभु ! गर्मी बहुत हो रही है ! सूर्य देवता की तपत भी बहुत है ! हम सभी बड़े व्याकुल हो रहें हैं ! आप तो स्वंय अन्तर्यामी भगवान है ! आप कृपा करो कि मौसम ठण्डा हो जाए ! स्वामी जी उस समय भजनानन्द की मौज में थे !

गर्मी में चलकर सभी, संत हुए बेहाल ।
विनती सुन गुरुदेव ने, वर्षा की तत्काल ।।

फिर क्या था- स्वामी जी की हृदय की तार परमात्मा में एकाकार हो गयी ! भक्ति का अनोखा आलम ! शरीर का भान नहीं ! उस आत्मानन्द के आनन्द को कौन समझे ! स्वामी जी ने एकाएक तम्बूरे की तान को छेड़ते हुए भक्ति भाव से भजन प्रारम्भ किया :-

राग जो सारंग तुमने छेड़ा, बादल घिर-घिर आये ।

पतझड़ दूजे ही पल देखो, सावन सा लहराये ।

सब पे तेरा है अधिकार, तेरी लीला अपरम्पार।

सृष्टि की लगाम।।

स्वामी जी के भजन में इतना रस और भाव था कि इन्द्र देवता भी अपने आप को नहीं रोक पाए ! उस वक्त का दृश्य भी कुछ अलौकिक ही था ! घनघोर घटा के साथ बदरवा जमकर बरस पड़े ! मौसम सुहावना हो गया और बरखा रानी की फुहारें पड़ने लगी ! यह देखकर सभी प्रसन्न हो गए ! संत-भक्तों का तन-मन शीतल हो गया ! ऐसी लीलाओं का वर्णन तीन-चार बार जीवन चरित्र में आया है !

जब-जब भी भक्तों ने पुकार की है- तब-तब स्वामी जी ने उनकी हर मनोकामना पूरी की ! इधर इन्द्र देवता भी प्रसन्न होकर स्वामी जी से विदा लेकर चले गए !

ऐसे है सिद्ध लीला पुरुषोत्तम अवतारी महापुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज !

भगवान की होटल (अतिथि देवो भवः)

युगद्रष्टा सतगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज भेदभाव रहित होकर सभी संत- साधु- राहगीर- मुसाफिरो, दीन दुःखी आदि की तन- मन- धन से खूब सेवा- किया करते थे ! उनके लिए कोई भी अपना-पराया नहीं हुआ करता था ! सभी के प्रति समदृष्टि ! कोई भी उनके यहाँ आ जाते- तो उन्हे भरपेट प्रेम से भोजन- प्रसाद जरूर खिलाते थे ! उनका कहना था - कि **"दाना पानी दातार का- प्रारब्ध जीव की- सेवा किसी बड़भागी की"** सभी में भगवान की व्यापकता है ! सब कुछ भगवान का ही प्रसाद है ! इस पर सभी का अधिकार है !

ऐसे ही एक बार दोपहर के समय **"खण्डू गाँव"** में स्वामी टेऊँराम जी महाराज घर के बाहर खड़े थे ! तब एक अंग्रेज अधिकारी घोड़े पर सवार होकर कहीं जा रहा था ! स्वामी जी को बाहर खड़ा देखकर रूक गया और पूछा- बाबा जी- "यहाँ कोई अच्छी सी होटल है.? जहाँ हमें कुछ खाने- पीने के लिए मिल जाए ! हमें बहुत भूख लगी है !" स्वामी जी ने कहा - हाँ, हाँ नीचे उतरो ! यहीं पास में ही बहुत बढ़िया होटल है ! वहाँ आपको बहुत अच्छा स्वादिष्ट भोजन मिलेगा !

स्वामी टेऊँराम जी बिना कुछ बोले- उस अंग्रेज को स्वयं के

घर पर ले आए और अतिथि देवो भवः की उक्ती चरितार्थ कर उसे बड़े स्नेह भाव से बैठाकर..! जो घर का सादा भोजन बना हुआ था ! वह उसे बड़े प्रेम भाव से खिलाया ! घर का सादा भोजन खाकर और लस्सी (छाछ) पीकर वह अंग्रेज बड़ा ही तृप्त हो गया और बहुत प्रसन्न हुआ !

अंग्रेज आया द्वार पर, भोजन की ले आस ।
गुरुदेव ले आये घर तब, मिटाई भूख और प्यास ।।

उस अंग्रेज ने स्वामी जी से खाने के पैसे पुछे..? तब स्वामी जी ने कहाँ- बेटा ! **''यह भगवान की होटल है.. इसमें पैसे नहीं लगते !''** यह सुनकर वह अंग्रेज बड़ा प्रसन्न हुआ ! फिर वह स्वामी जी को प्रणाम करके चला गया ! इसी प्रकार **''सद्गुरु महाराज जी''** अनेक दीन-दुःखी, गरीब, अनाथ, मुसाफिर राहगीरों आदि की सेवा-बड़े प्रेम भाव से किया करते थे ! ऐसे सेवावतारी महापुरुषों को हमारा शत- शत नमन'... !

कहाँ से आते थे-आसन के नीचे से पैसे..??

एक समय सिध्द समर्थ युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज टण्डाआदम (सिंध) में स्थित **''श्री अमरापुर दरबार (डिब)''** पर विराजमान थे ! उस समय दरबार के भण्डारी संत प्रेमदास थे ! वे साँयकाल रोज सीधा-सामान लेने शहर जाते थे ! उस सामान के लिये वे पैसे स्वामी जी से लेकर जाते थे ! स्वामी जी तो थे फक्कड़ बाबा.... उन्हें पैसों से क्या काम.? वे तो जिस आसन पर विराजमान होते थे ! उसी आसन को ऊपर करके संत प्रेमदास से कहते- जितने पैसे चाहिए ! उठा लो ! प्रतिदिन का ऐसा ही नियम सा बन गया था ! कौन समझे महापुरुषों की अद्भुत रहस्यमयी लीलाओं को ! हम जिन्हें साधारण मानव समझते हैं वे तो ईश्वरीय अवतार होते हैं ! न जाने कब- कौन सी लीला रच दे ! ये हम नहीं समझ सकते !

एक समय ऐसा हुआ कि संत प्रेमदास नित्यनियम से शहर जाने के लिए स्वामी जी के स्थान पर आये ! देखा कि स्वामी जी अपने आसन पर नहीं है ! शाम का समय था ! शहर जाने के लिए देर भी हो रही थी ! ऐसा विचार कर ही रहे थे कि इतने में कुछ साधु-संत भी वहाँ पहुँच गए ! संतों ने प्रेमदास से पूछा कि- आप

यहीं खड़े हो.? बाजार नहीं गए क्या..? तब संत प्रेमदास जी ने कहा - बाजार तो जा रहा हूँ ! लेकिन स्वामी जी से आज्ञा लेनी थी और कुछ पैसे भी लेने थे ! इसलिए श्री गुरु महाराज जी की प्रतीक्षा कर रहा हूँ ! काफी समय तक इंतजार के बाद संतों ने पूछा- आपको स्वामी जी पैसे कहाँ से देते हैं.? प्रेमदास जी ने कहा- स्वामी जी तो जिस आसन पर विराजमान होते हैं ! उसी आसन के नीचे से पैसे निकाल कर देते हैं ! अगर ऐसी बात हैं तो- चलो ! हम आपको वहाँ से पैसे निकाल कर दे देते हैं ! देरी होने के कारण हम स्वामी जी को बता भी देंगे ! देखिए यहाँ अब कैसी लीला होती है ! जिसे समझ पाना बड़ा मुश्किल..!

अब सारे संत-महात्मा स्वामी जी की कुटिया में आये ! जहाँ आसन था ! वहाँ से चादर को ऊपर उठाया तो कुछ नहीं मिला ! पूरा बिस्तर उठाया- फिर भी कुछ नहीं मिला ! चटाई उठाई लेकिन एक भी पैसा नहीं मिला ! सब एक-दूसरें को प्रश्नवाचक निगाहों से देखने लगे ! परस्पर चर्चा करने लगे कि यहाँ तो कुछ भी नहीं है तो फिर स्वामी जी पैसे कहाँ से देते हैं..? आखिर जैसे पहले आसन बिछा हुआ था ! वैसे ही पुनः आसन बिछा दिया गया ! इतने में सर्वशक्तियों के मालिक स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी आ गए ! सभी नत् मस्तक हुए ! सारा वृतान्त सुनकर स्वामी जी मन्द-मन्द मुस्कराने लगे ! स्वामी जी ने कहा- चलो भाई- हमारे साथ.. !

आपको माँगने नहीं आता ! स्वामी जी अपने आसन पर आये और चादर ऊपर करके संत प्रेमदास से कहा- लो जितने पैसे चाहिए ! यहाँ से उठा लो और बाजार से शीघ्र सीधा-सामग्री ले आओ ! यह देखकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ ! इससे पूर्व सभी संतों ने देखा था ! चादर के नीचे कुछ नहीं था ! अब कहाँ से आ गये पैसे..? यह अचरजमयी लीला देखकर सभी कहने लगे- हे भगवान् ! यह कैसी लीला..? आपकी लीला को समझ पाना बड़ा मुश्किल व असंभव ! बाबा जी की ऐसी अद्भुत लीलाओं को आज तक कोई नहीं समझ पाया !

गुरु सेवा का फल

शास्त्रों में सेवा का बड़ा महत्व बतलाया गया है ! सेवा भी एक प्रकार की ईशभक्ति होती है ! गुरु की सेवा यानि भगवान की सेवा ! निःस्वार्थ भाव से की गयी सेवा समय पर अवश्य ही फलीभूत होती है ! तन के द्वारा की गई सेवा अहंकार व अभिमान को चूर करती है ! सदगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज भी गुरुदेव की सेवा तन्मयता श्रद्धा- भाव से किया करते थे ! जिसके फल स्वरुप आज उनका इतना यशोगान हो रहा है ! ये सब सेवा का ही फल है ! सेवा कभी भी किसी की व्यर्थ नही जाती ! समय पाकर अवश्य ही फलीभूत होती है ! **'जिन सेविया तिन पाइया मान'**

ऐसे ही सिन्ध प्रदेश में एक समय सत्संग सभा लगी हुई थी- **'दादा गुरुदेव सांई आसूराम जी महाराज'** के मुखारविन्द द्वारा हजारों श्रद्धालुजन सत्संग गंगा का अमृत पान कर रहे थे ! सत्संग समाप्ति पर गुरूदेव दादा आसूराम जी महाराज ने स्वामी टेऊँराम जी से कहा- भक्त जी ! किसी सेवादारी से कह दो- कि हमारे जूते (चरण पादुका) ले आए ... श्री गुरूदेव की आज्ञा शिरोधार्य कर स्वयं स्वामी जी चरण पादुका अपने मस्तक पर रखकर भरी सभा में श्री गुरुदेव जी के पास लेकर आए...!

चरण पादुका चाहते, सद्गुरु आसूराम ।
सत्संग से उठ शीश पर, लाये संत टेऊँराम ।।

दादा गुरूदेव सांई आसूराम जी महाराज ने जब स्वामी जी को चरण पादुका मस्तक पर लाते हुए देखा... बड़े गद् गद् हो गये ! बड़ा आश्चर्य भी हुआ और स्वामी जी को प्रेम भाव से अपने हृदय से लगा लिया ! दादा सांई आसूराम जी मन ही मन सोचने लगे - 'टेऊँ' ! तुम धन्य- धन्य हो ! तुम्हारे इतने हजारों शिष्य सेवक होते हुए भी तुम स्वयं भरी सभा में हमारे जूते अपने मस्तक पर रखकर लाये हो..? तुमने हमारा दिल जीत लिया ! ऐसे शिष्य धन्य- धन्य हैं.... जिसके मन में गुरु के प्रति इतनी निष्ठा व समर्पण भाव हो ! ऐसे शिष्य स्वयं का नाम तो उज्ज्वल करते ही है ! साथ ही गुरु की यश- कीर्ति को भी बढ़ाते है.... !

दादा गुरूदेव श्री सांई आसूराम जी महाराज ने स्वामी जी का ऐसा स्नेहात्मक सेवा भाव देखा तो सहज ही हृदय से आशीर्वाद निकला "टेऊँराम तुम धन-धन हो" तुम्हारे माता- पिता भी धन- धन है ! जो ऐसे सुसंस्कार बालक को जन्म दिया ! तुम्हारी सदैव जय- जयकार होगी- यश- कीर्ति बढ़ेगी...टेऊँराम... तुम्हारा नाम सदैव अजर अमर रहेगा... सारा जहान तुम्हारे सामने नत मस्तक होगा... गुरुदेव दादा जी का आशीर्वाद फलीभूत हुआ... !

गुरुदेव सांई आसूराम जी महाराज के आशीर्वाद से **'स्वामी टेऊँराम जी'** की यश- कीर्ति चहुं ओर दिनों दिन बढ़ती रही है... आज सारे जहान में स्वामी जी की जय- जयकार है ! ये सब **'गुरु सेवा'** का ही फल है !

ऐसे सेवा अवतारी श्री गुरुदेव जी को हमारा.. शत- शत नमन....

भाव के भूखे होते हैं-संत और भगवान

एक भोला-भाला भक्त '**श्री अमरापुर स्थान**' टण्डोआदम में रहता था ! वह निर्मल- निष्कपट व बालवत् स्वभाव का था किन्तु सेवा करने में थोड़ा आलसी था ! पर उसकी '**महाराज जी**' के प्रति अनन्य भक्ति भाव था !

वहाँ के संत-सेवादारी '**महाराज जी**' से उस भक्त की अनेक बार शिकायत करते थे- यह रामू कोई सेवा कार्य नहीं करता है ! '**महाराज जी**' उन सबकी बातें सुनकर मंद-मंद मुस्कुरा देते थे ! क्योंकि वे जानते थे - वह भक्त बड़ा सीधा-सादा, सरल व भोला- भाला है ! भगवत्- भजन व गुरु भक्ति में निपुण है !

प्रेम भाव से होत वश, भक्तवत्सल भगवान ।
कहे टेऊँ तांते करो, हरि से प्रेम प्रधान ।।

एक दिन स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने उसकी परीक्षा लेनी चाही और उससे कहा- बेटा- रामू ! कल सुबह जल्दी उठकर हमारे स्नान के लिए पानी की बाल्टी लेकर आना ! यह सुनकर वह भक्त रामू खुश हो गया ! आज स्वामी जी ने मुझे सेवा दी है ! अगली सुबह वह प्रसन्न होकर जल्दी उठा और सोचने लगा ! मैंने सुना है- संतों व गुरुजनों की सेवा पवित्रता से करनी चाहिए ! इसलिए मुझे भी स्वामी जी की सेवा पवित्रता से करनी चाहिए ! तो वह पहले

स्वंय स्नान करके फिर पवित्र होकर स्वामी जी के लिए पानी की बाल्टी लेकर आया ! इस बीच पानी लाने में देरी भी हो गयी ! स्वामी जी ने उस भोले भक्त से पूछा - भक्त ! इतनी देर से क्यों लाये हो.. ? उस रामू भक्त ने बड़ा सुंदर उतर दिया ! गुरु जी ! मुझे क्षमा कर करना! आप स्वयं भगवत् स्वरुप महापुरुष है ! भगवान व गुरुदेव की सेवा पवित्रता से करनी चाहिए ! इसलिए पहले मैं स्नान करके पवित्र हुआ ! फिर आपके लिए जल की बाल्टी लेकर आया हूँ! अतः आने में देर हो गई ! उसने बड़े ही सरल- स्वभाव में कहा- **'श्री गुरुदेव भगवान'** उसके ऐसे सरल स्वभाव को देखकर बड़े प्रसन्न हुए ! मन्द मन्द मुस्कराकर उसे आशीर्वाद दिया ! इसे कहते स्वच्छंद भाव भक्ति !

हमे भी 'श्रीगुरूदेव' के प्रति ऐसा भगवत् भाव रखना चाहिए और उनकी सेवा पवित्रता से करनी चाहिए !

हरा-भरा हुआ आम का वृक्ष

एक समय श्री अमरापुर दरबार (डिब) पर युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भ्रमण कर रहे थे ! उस समय स्वामी जी के साथ कुछ संत-महात्मा व भक्तजन भी थे ! ऐसे आगे चलते-चलते उस जगह पहुँचे- जहाँ आम का एक बड़ा पेड़ लगा हुआ था ! इस वृक्ष में पहले बहुत आम फल लगते थे ! लेकिन पिछले दो-तीन सालों से उस पेड़ पर आम के फल नहीं आ रहे थे ! संत कृष्णदास जी- जो सद्गुरु महाराज जी के साथ थे ! वे कहने लगे- स्वामी जी ! इस वृक्ष को कटवा देना चाहिए ! क्योंकि ये वृक्ष दो-तीन वर्षों से फल नहीं दे रहा है ! जबकि हम इसमें पानी-खाद देकर इसकी अच्छी तरह देखरेख करते हैं ! फिर भी इसमें आम नहीं आ रहे है ! आपकी आज्ञा हो तो इस वृक्ष को कटवा दिया जाए! व्यर्थ में ही हमे मेहनत करनी पड़ती है !

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने संत कृष्णदास को धीरज देकर कहा- अरे भाई! वृक्ष को कभी काटना नहीं चाहिए ! ये प्रकृति की अनुपम-अद्भुत धरोहर है ! ये वृक्ष हमें फल-फूलों के साथ जीवन दायनी ऑक्सीजन भी देते हैं एवं छाया भी प्रदान करते हैं ! वायु को शुद्ध करते हैं ! इन वृक्षों में अनेक गुण होते हैं ! इनके नीचे भजन करने में भी आनन्द आता है ! आप कहते हो कि ये वृक्ष फल नहीं दे रहे हैं- तो हम वृक्ष देवता से कह देते हैं ! फिर ये

सबको मीठे- मीठे फल अवश्य ही खिलाएँगे ! उसी क्षण युगपुरुष सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने अपनी चिप्पी से जल का छींटा **'सतनाम साक्षी..., सत्‌नाम साक्षी...'** कहकर उस वृक्ष पर लगाया और वृक्ष देवता से कहा- हे वृक्ष देवता ! साधु-संत लोग आपके आम खाना चाहते हैं ! ये आपकी सेवा भी कर रहे हैं ! आप तो पर उपकारी हैं ! आप सभी को फल देनहार हैं ! आप इन सबको अगले साल भरपूर आम फल खिलाना ! महापुरुषों के मुख से निकला वाक्य सत्य हुआ ! सतनाम साक्षी अभिमंत्रित जल का छींटा फलीभूत हुआ !

महापुरुष द्वारा स्पर्शित अमृत जल-अमृत वचन कभी मिथ्या नहीं हो सकता ! स्वयं परमात्मा उसे पूरा करते हैं और साधु-संतों का मानवर्धन करते हैं !

फिर क्या था-अगले वर्ष उसी आम के वृक्ष में बहुत ही अधिक मात्रा में आम के फल लगे ! ये देखकर सभी संत- महात्मा बड़े प्रसन्न हुए ! सभी भक्त- संत स्वामी जी का गुणगान करने लगे! धन्य- धन्य है-ऐसे संत महापुरुष.. कोटि कोटि नमन...

कालीदास पटेल को प्राप्त हुई पाँच संतान

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज सदैव सैर (रटन) करते थे ! सैलानियों की तरह यत्र-तत्र भ्रमण कर अन्धकार में डूबे लोगों में ज्ञान की ज्योति जगाते रहते थे ! **''वाह-वाह मौज-फकीरा दी''**

ऐसे ही एक समय देशारटन करते हुए **युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज** गुजरात के अमदाबाद शहर पहुँच गए ! उस समय यहाँ के किसी भी व्यक्ति विशेष से परिचित नहीं थे ! तब भजन- सत्संग व भ्रमण करते-करते श्री कालीदास पटेल गुजराती के घर पहुँच गए! वह बड़ा ही संतसेवी व धर्मनिष्ठ भक्त था ! संतो के प्रति निष्ठा भाव रखता था ! कालीदास संत महात्माओं को देखकर बड़ा गद्-गद् हुआ !

संतनि चरन पधारिया, दया करे मम धाम ।
कहे टेऊँ पूरन भये, आज हमारे काम ।।

आज 'श्री गुरूदेव भगवान' की इस दास पर बड़ी कृपा हुई है ! बड़े ही श्रद्धा भाव के साथ श्री सद्गुरु महाराज जी व संत मण्डली के रहने, खाने-पीने की व्यवस्था कर आसन दिया ! श्री गुरु महाराज जी संत मण्डली के साथ कुछ दिन तक यहाँ रहकर भजन-

सत्संग – संकीर्तन की मौज आदि का आनन्द लिया ! अमदाबाद के भक्त भी संतो का दर्शन- सत्संग सुनकर बड़े प्रसन्नचित हुए !

इस बीच एक दिन कालीदास भक्त उदास बैठे थे ! उनको इस तरह बैठा देखकर स्वामी जी ने पूछा - अरे- भाई! आप उदास क्यों बैठे हो.? क्या बात है..? तभी कालीदास हाथ जोड़कर नेत्रों से अश्रुधारा बहाते हुए कहा – हे प्रभु ! अन्तर्यामी बाबा जी ! आपकी कृपा से मेरे पास सब कुछ है, किंतु संतान नहीं है ! बिना संतान के घर- परिवार खाली- खाली, सुना-सुना रहता है ! हे- कृपानिधान ! मेरे ऊपर दया करो ! कृपा करो ! जिससे मुझे संतान सुख की प्राप्ति हो जाए ! उस वक्त स्वामी जी अपनी भजनानन्द की मौज में बैठे थे ! कहते हैं- जब संत-दरवेश-फकीर परमात्मा की बंदगी में बैठे हो- उस वक्त कृपा हो जाए तो सर्व मनोरथ सिध्द हो जाते हैं ! फिर वो कैसा भी कार्य क्यों न हो ! अवश्य ही पूरा हो जाता है ! ऐसा ही कालीदास पटेल के साथ हुआ ! महापुरुषों की कृपा बरस पड़ी !

सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने आशीर्वाद दे दिया ! आप चिंता नहीं करो ! भगवत् कृपा से तुम्हे एक नही, पाँच संतान की प्राप्ति होगी ! श्री गुरु भगवान ऐसा आशीर्वाद देकर अपनी यात्रा पर चले गए !

इधर समय पाकर महापुरुषों की वाणी सत्य साबित हुई ! भक्त की सेवा व आर्शीवाद फलीभूत हुआ ! कालीदास के दो पुत्र एवं

तीन पुत्रियां हुई ! जिसमें विक्रम भाई, सुकेतु भाई दो पुत्र एवं भामनि, तक्षशिला व ज्योतिका नाम की तीन पुत्रियां ! श्री गुरुदेव की कृपा से उनका परिवार खुशहाल हो गया ! बारम्बार स्वामी जी की कृतज्ञता-आभार मानने लगे ! धन्य-धन्य हैं श्री गुरूदेव भगवान !

तो ऐसी होती हैं संत-तपस्वियों की महती कृपा ! आज भी उस परिवार में **'युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** की चरण-पादुका, चटाई (जहाँ पर स्वामी जी बैठते थे) और स्वामी जी की चार-पाँच तस्वीरें रखी हुई हैं !

यह सारा वृतान्त कुछ समय पहले कालीदास पटेल के परिवारजनों ने संतो को बताया !

दान में देरी नहीं ....

टेऊँ श्रद्धा प्रेम से - सुन संतनि इतिहास !
हरि भक्तों के गाय गुण - हिरदे पाय हुलास !!

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज भगवत् भजन- सत्संग करते निरन्तर देशारटन किया करते थे ! कभी कहाँ तो कभी कहाँ..? भगवद् भक्ति में मस्त!

ऐसे ही एक समय यात्रा के दौरान '**भगत कंवरराम जी**' का सत्संग - भजन सुनने किसी शहर में उनकी सभा में पहुँच गए ! दोनों सन्त-महापुरुषों का आत्मीय मिलन हुआ ! दोनों एक दूसरे से मिलकर बड़े प्रसन्नचित हुए ! इसी सत्संग के मध्य में ही एक याचक ने भगत कंवरराम जी से वस्त्र की माँग की ! भक्त जी ! हमे वस्त्र दो! भगत साहब ने कहा- भाई ! कोई वस्त्र मिलने दो, तो हम आपको दे देंगे ! भगत कंवरराम साहब का नियम था कि भजन-सत्संग में जो पैसा-वस्त्र आदि मिलता था, वो सब अनाथ - गरीबों में तत्काल बाँट देते थे ! स्वयं के पास ना रखकर दान कर देते थे ! उनका हृदय विशाल व उदारचित था ! उनके साथ बहुत से गरीब-फकीर चलते थे ! ऐसे ही थोड़ी देर बाद उसी फकीर ने पुनः वस्त्र की माँग की ! वस्त्र न होने पर भगत जी थोड़ी देर शान्त रहे ! इधर-उधर देखा !'

तब देरी ना करते हुए उदारचित्त सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने सारी सभा के सामने अपना चोला (वस्त्र) उतारकर भगत कंवरराम साहब को दिया और कहा- साई ! आप इसे ये वस्त्र दे देंवे ! आपके पास से कोई खाली नही जाता ! संत- संत का मान रखते है ! उन दिनों स्वामी जी शरीर पर तीन ही वस्त्र धारण किया करते थे- चोला- लंगोटी व टोपी ! स्वयं को कम वस्त्र में रखकर दूसरे का अंग ढका व संतो का मान रखा ! स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने ! जगत माहिं – संत परम हितकारी !

संत संत के प्राण हैं – संत संत पर ध्यान ।

सबके प्यारे संत हैं – करते सबका मान ।।

स्वामी जी की ऐसी परम उदारता देखकर **'भगत कंवरराम साहब जी'** अभिभूत होकर कहने लगे- स्वामी टेऊँराम जी ! आप धन्य हैं, आप धन्य- धन्य हैं ! आपने भरी सभा में अपने मान को न देखकर चोला उतारकर इस दरिद्र को दे दिया ! आपने हमारा भी मान बढ़ाया ! आप सच में ही महान सत्पुरुष हैं ! तब दोनों महापुरुष एक – दूसरे के प्रति हाथ जोड़कर कृतज्ञता प्रगट करते है।

दोनों महापुरुषों को शत् – शत् नमन ! कोटि – कोटि वंदन !

जिसका आश्रम - वहीं आकर बनायेगा

भक्तों के वश में रहे, कह टेऊँ भगवान !
योग क्षेम तांका करे, सुख सम्पत्ति मान !!

परमात्मा प्रत्येक युग में भक्त-व संत-महात्माओं के दुःख दूर करते हैं ! भक्त नामदेव, सैना, सधना, प्रह्लाद, ध्रुव, कबीरदास आदि भक्तों के समय-समय पर दुःख कष्ट- दूर कर उनके कार्य पूर्ण किये हैं ! भक्त धन्ना के कदू के खेत से गेहूँ बना दिये, तो ज्ञानेश्वर के कहे अनुसार एक भैंसे से गायत्री मंत्र उच्चारण करवा दिए ! अर्थात् जब कभी भी भक्तों पर कष्ट- विपत्ति आयी है, तो भगवान ने उनकी रक्षा की हैं ! भक्तों का मान बढ़ाया है !'

इसी प्रकार सिंध प्रदेश के युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को भी जीवनकाल में अनेक विपत्तियों और कठिनाइयों का सामना करना पड़ा !

पर कहते हैं न कि जिसे भगवान पर पूर्ण विश्वास होता है ! उसका बाल भी बांका नहीं होता ! स्वामी जी का भी भगवान पर पूर्ण विश्वास था ! मजहबियों-भेदवादियों द्वारा कितने ही कष्ट-दुःख दिये गये ! पर मुख से कभी भी किसी के प्रति कुछ भी नहीं कहा ! किसी को कड़वा शब्द तक नहीं बोला ! कितने परिश्रम, सेवा भाव से रेत के टीले पर आश्रम बनवाया था ! वह सब ईर्ष्यालुओं ने जला दिया ! कुँआ तोड़ दिया ! बगीचे को तहस-नहस कर दिया !

पेड़-पौधे काट दिए ! झोंपड़ियाँ, चबूतरे, भण्डारगृह सभी में आग लगा दी ! जिसका वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता ! उस समय ऐसा आभास हो रहा था मानो कि वह प्रलयकाल की अग्नि हो ! जो सच्चे प्रभु भक्त होते हैं वे इस कठिन परीक्षा में **'प्रभु के दरबार'** में पास हो जाते है ! जिन-जिन संत- पुरुषों ने सच्ची भक्ति की हैं ! उन्होंने पहले दुःख ही पाया है ! सोना जितना जलाया जाता है ! उतनी ही उसमें चमक अधिक होती हैं ! संत-महात्माओं का जीवन भी उसी प्रकार का होता है ! सत्यता में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं!

इतना सब कुछ होने पर किसी से कुछ भी नहीं कहा ! ये सब तो प्रभु परमात्मा की लीला है ! सब देखते रहो ! अनेक लोगों ने स्वामी जी व संतों से कहा- आप सामान निकाल लो ! किन्तु स्वामी जी ने कहा - जिनका सामान है - वह ही अपने आप निकालेगा! जिसने आश्रम बनवाया है - प्रेरणा दी हैं ! वही सब कुछ आकर करेगा ! हमारा कुछ भी नहीं है ! इतने निर्मोही - विरक्त - फकड़ थे - युगपुरुष सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज !

इसी प्रकार सिध्द योगी महापुरुष स्वामी टेऊँराम जी महाराज के आश्रम को जला देने पर भी किसी प्रकार की कोई प्रतिक्रिया नहीं ! न दुःख ! न क्रोध ! न कोई मन में क्षोभ ! अपनी मस्ती में मस्त ! फिर क्या था ! देखो- भगवान की लीला !

लक्ष्मी नारायण खड़े, धार अंग्रेजी भेष ।
किसने आग लगाई है, कहो हमें दरवेश ।।

स्वयं प्रभु परमात्मा **'भगवान श्री लक्ष्मी नारायण'** यूरोप-यूरोपियन (अंग्रेजी अफसर) का रूप धारण कर स्वामी जी के

पास आये और सब कुछ पूछा – ये आश्रम किसने जलाया है..?? कैसे जला ये सब...? स्वामी जी अपने ध्यानमग्न ! आंख खोलकर देखा और मंद – मंद मुस्करा रहे थे ! स्वामी जी पहचान गए थे ! ये स्वंय परमात्मा रूप धारण कर आये है ! फिर स्वामी जी कहा– 'आपका आश्रम है ! आपको ही बनना है !' हमारा कुछ भी नहीं है! सब कुछ आपको ही करना है ! फिर ऐसी लीला बनी कि कुछ समय बाद स्वयं प्रभू – परमात्मा ने पुनः **'श्री अमरापुर आश्रम'** (दरबार) का निर्माण करवा दिया और अपने भक्त स्वामी जी का मान बढ़ाया !

गीता में बताया गया कि **'मेरे भक्तकैसे होते हैं !'** जो अनुकूल वस्तु पाकर हर्षित नहीं होते और प्रतिकूल वस्तु पाकर दुःखी नहीं होते ! जो चीज नष्ट हो गई ! उसका शोक नहीं करते तथा जो वस्तु उसके पास नहीं है ! उसकी आकांक्षा नहीं करते ! मान–अपमान में भी समान रहते है ! आसक्ति से रहित रहते है ! जीवनभर ऐसी वृत्ति रखकर सदैव प्रभु परमात्मा के चिंतन में स्थित रहते है ! अनेक कठिनाइयाँ आने पर मन विचलित नही करते ! न ही कभी किसी का अहित सोचते है और न ही कभी कड़वा शब्द बोलते है ! परमात्मा की रजा में राजी रहते है ! ऐसे ही थे– सर्वगुण सम्पन्न परम योगीश्वर स्थित प्रज्ञ सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज ! कोटि – कोटि वन्दन !

हून्दलदास ब्राह्मण बना शिष्य

युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज सिन्ध के सिध्द तपस्वी महापुरुष थे ! उस संत - फकीर - दरवेश में न जाने कैसी अद्भुत शक्ति थी ! जो भी एक बार उनका दर्शन या सत्संग श्रवण कर लेता तो वह अलौकिक आनन्द प्राप्त कर फिर वह उन्हीं का भक्त हो जाता था ! वह चाहे निम्न या उच्च जाति वर्ण कुल का क्यूँ ना हो... बस - स्वामी जी का भक्त हो जाता था ! ऐसे कामिल पुरुष विलक्षण ही होते हैं ! उन्हें साधारण मानव समझ ही नहीं सकते !

ऐसे ही सिंध के पंडित हून्दलदास ब्राह्मण ने जब पहली बार युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का दर्शन व सत्संग श्रवण किया ! तब से वह स्वामी जी का भक्त हो गया ! प्रेमाश्रु बहाकर हाथ जोड़कर कहने लगा - हे प्रभू ! ये दास भी आत्म ज्ञान का भूखा-प्यासा है ! आपके द्वार पर आया है ! आप अपने ज्ञान के भण्डार से कुछ प्रसाद खिलाने की कृपा करें ! ताकि मन में सुख-शान्ति प्राप्त हो सके !

ब्राह्मण हून्दलदास हाथ जोड़कर कहने लगा - हे प्रभु दीनानाथ ! मैं बहुत पढ़-लिख चुका हूँ ! मैंने धर्म-शास्त्रों का बहुत अध्ययन किया है ! सभी शास्र कहते हैं कि बिना गुरु के आत्मा का साक्षात्कार नहीं होगा ! न ही मन को शान्ति प्राप्त होगी और मुक्ति भी सम्भव नहीं ! मैं कितने समय से सच्चे सद्गुरु की खोज में था ! कितने ही संत-महापुरुषों से ज्ञानचर्चा हुई ! अनेक संतों के दर्शन,

सत्संग श्रवण किया पर मेरा मन कहीं नहीं लगा ! बस ! अब आपका दीदार-दर्शन व सत्संग श्रवण करने से मेरे मन में पूर्ण विश्वास हो गया है कि आप ही मेरा उद्धार- कल्याण करेंगे ! आप को ही मैं सब कुछ मानता हूँ ! आपके नूर-नूरानी, तेजोमय मुखमण्डल के दर्शन से संतप्त ह्रदय को सुख व शान्ति की प्राप्ति हुई है ! स्वामी जी की भक्ति - तपस्या का अद्‌भुत प्रभाव था ! तब हृदय द्रवित होकर हुन्दल ब्राह्मण ने कहा -

गंगा मथुरा काशी फिरयो, फिरयो तीर्थ सारे ।

कहाँ नहीं मुझ प्रभु मिलिया, आयो शरण तुम्हारे ।।

हे दीनानाथ, भक्तवत्सल ! मैं आपकी शरण में हूँ ! मेरा उद्धार कीजिए ! हमें प्रभु मिलन की राह बतायें..? जिससे आत्मा का साक्षात्कार करके मोक्ष को प्राप्त कर सकूँ ! जिस प्रकार अर्जुन का मोह नष्ट होने के बाद भगवान ने उसे अपना शिष्य स्वीकार किया!

पहले समय में **'श्री गुरूदेव'** इतनी शीघ्र शिष्यत्व स्वीकार नहीं करते थे ! पहले शिष्य की परीक्षा ली जाती थी ! अगर वह परीक्षा में सफल हो जाता था ! तब उसे गुरुमंत्र की दीक्षा दी जाती थी ! समर्थ गुरु रामदास जी ने शिवाजी से, रामकृष्ण परमहंस ने विवेकानन्द से और सद्‌गुरु आसूराम जी महाराज ने स्वामी टेऊँराम जी महाराज से अनेक गूढ़ परीक्षाएँ लेने के बाद ही शिष्यत्व स्वीकार किया ! ऐसे ही स्वामी जी ने भी हून्दलदास ब्राह्मण को परीक्षा लेने हेतु आश्रम की सेवा आदि का कार्यभार सौंपा ! सेवा से ही तन-मन का अहंकार चूर होता है ! निर्मलता -पवित्रता आती हैं ! अभिमान दूर होता है । इस प्रकार से हुन्दल ब्राह्मण बड़े श्रद्धाभाव से आश्रम व संतों की सेवा करने लगा ! झाडू लगाना, भोजन खिलाना, सत्संग

पण्डाल की साफ-सफाई सेवा करना आदि ऐसी अनेक सेवाएँ गुरु आश्रम में करने लगा ! स्वामी जी ने देखा और सोचा कि - इसमें अब उच्च जाति या विधा का अभिमान-गर्व नहीं रह गया है ! निःसंकोच सेवा करता है तथा संतों के प्रति मृदुता का व्यवहार व श्रद्धा भाव हैं !

ऐसे सेवा भाव देख अधिकारी समझकर हुन्दल ब्राह्मण को स्वामी जी ने **'गुरुमंत्र'** की दीक्षा प्रदान की ! इस मार्ग में हुन्दल ब्राह्मण को घर-परिवार में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा! उन्हें अपनी जाति से निकाल दिया गया ! भक्ति-प्रेम मार्ग तो वैसे भी कठिन होता है ! बहुत विघ्न आते है !

भक्ति करनी कठिन है-सुगम न तांको जान ।
टेऊँ भक्ति सो करे-त्यागे जो अभिमान ।।

उन्हें फिर जाति-धर्म- कुल- मान-मर्यादाओं के सामने अनेक विषम परिस्थितियों व कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ! किन्तु वे अपने **'श्री गुरूदेव भगवान'** की भक्ति में पूर्णरूप से सफल सिध्द हुए ! तब द्रवीभूत हृदय से **'श्री गुरुदेव'** के समक्ष ये भाव रखा !

गंगा काशी गिरनार तक, खोजा चोरों धाम ।
हुन्दल के मन भाइया, सद्गुरु टेऊँराम ।।

इसके उपरांत पूरे जीवन भर स्वामी जी की चरण शरण में व गुरु आश्रम की सेवा-सुमरन करके अपना कल्याण किया !

ऐसे थे धर्म- जाति, भव-बन्धनों से मुक्त कराने वाले भक्तवत्सल प्रभु परमात्मा के साक्षात् स्वरुप श्री सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज को कोटि - कोटि वन्दन !

रेत के कण-बने मिठाई के मण

सिन्ध प्रदेश के टण्डाआदम में स्थित युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की विशाल '**श्री अमरापुर दरबार (डिब)**' रेत के टीले के ऊपर बनी हुई थी! जिसमें चहुँ ओर रेत ही रेत ! जगह-जगह मिट्टी के टीले ! टीले पर बना '**श्री अमरापुर दरबार**'! दरबार पर रहने वाले संत-महात्मा और सेवादारी !

एक समय '**महाराज श्री**' भजनानन्द की मस्ती में थे ! वैराग्य का अनोखा आलम मुखमण्डल पर शोभित हो रहा था ! स्वामी जी आश्रम में चारों ओर भ्रमण कर रहे थे !

दोपहर के समय-भोजन की घंटी बजी ! सभी सेवादारी-संत-महात्मा भोजनालय स्थल पर पहुँचे ! सभी पंक्तिबद्ध कतार में भोजन प्रसादी ग्रहण करने हेतु बैठे थे ! यहाँ एक बात ध्यान देने योग्य है कि - उस वक्त पक्का स्थान बना हुआ नहीं था ! ऐसे में टीले के ऊपर लीप - पोतकर उसे अस्थायी भोजनालय का रूप दिया गया था ! आसपास रेत ही रेत होती थी ! आँधी - तूफान आने पर चारों ओर रेत ही रेत की चादर बिछ जाती थी !

उस समय स्वामी जी लाठी लेकर आश्रम की देख - रेख कर रहे थे ! भोजन की घंटी बजने पर सभी संत - महात्मा कतारबद्ध पंगत में बैठे थे ! तब स्वामी जी वहाँ पहुँचे ! सभी संत -

सेवादारी ने स्वामी जी को देखकर प्रसन्नचित्त होकर उठ खड़े हुए और स्वामी जी को प्रणाम किया !

अब यहाँ कौनसी लीला करते हैं बाबाजी ! कुछ अता-पता नहीं ! प्रसन्नचित्त मुद्रा में सभी को बैठने का संकेत किया ! भोजन परोसने वाले सेवादारियों ने संत-महात्माओं को थाली देकर, भोजन प्रसादी को परोसा ! सभी को भोजन मिल चुका था ! मंत्र पढ़कर भोजन प्रसादी शुरु होने वाली थी ! उसी समय तूफान की तरह तेज हवा चली और चारों ओर रेत फैल गई ! जहाँ भण्डारे पंगत में संतजन बैठे हुए थे ! उनके भोजन की थालियों में रेत पड़ गई ! अब संतजन भोजन खाने को मना करने लगे ! बोले- स्वामी जी ! इस भोजन में तो अब रेत ही रेत पड़ गई है ! अतः रेत पड़ा भोजन कैसे खायेगें ?

अमरापुर दरबार मे, उड़े रेत के कण ।
सद्गुरु कृपा प्रसाद से, बने मिठाई के मण ।।

तब सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने यहाँ एक अद्भुत लीला रची ! **'महाराज श्री'** ने बड़े ही मृदुल भाव से कहा- आप सब भगवान का प्रसाद समझकर इसे खायें ! आप समझना कि- ये रेत नहीं मीठा प्रसाद हैं ! देखो ! महाराज श्री की वाणी में कितनी न अद्भुत शक्ति थी ! जो कह दिया वह सत्य हो जाता था ! ऐसा भाव बनाकर सभी ने भोजन प्रसादी खाना शुरू किया ! अब

क्या देखते है - जैसे ही पहला कौर मुख में रखा तो सचमुच भोजन में एक भी रेत का कण नहीं दिखाई दिया ! सारे के सारे चावल मीठे और स्वादिष्ट मिठाई की तरह लगने लगे ! यह लीला देखकर सभी को बड़ा आश्चर्य लगा ! यह कैसे संभव हुआ..? उनकी लीला वे ही जानें ! फिर बड़े स्नेह भाव से सभी संत - महात्मा - भक्तजनों ने भोजन प्रसादी ग्रहण की ! ऐसे थे - अचल प्रकृति को भी अपने वश में रखने वाले अवतार कोटि के महापुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज !

वकील बना महाराज श्री का शिष्य

संत समागम तब मिले, जबहीं जागे भाग !
कह टेऊँ सत्संग बिन, होय न हरि अनुराग !!

शिकारपुर में एक प्रतिष्ठित वकील भगवानदास रहता था ! जो किसी भी संत-साधु को नहीं मानता था ! उसे अपनी पद - प्रतिष्ठा व धन-दौलत का धमण्ड व नशा था ! वकील होने के कारण सभी नगरवासी उससे भयभीत रहते थे ! अगर कोई सज्जन व्यक्ति आसपास संत-महात्माओं का सत्संग करवाता तो उन्हें वकील भगवानदास का भय लगा रहता था ! कुछ कह न दे ! वह कभी भी किसी संत के सत्संग में या दर्शनार्थ नहीं जाता था ! साधु-संतों से कोसों दूर ! किसी संत-महापुरुष को प्रणाम करना तो दूर उन्हें मानता तक नहीं था ! किन्तु कहते हैं- जिनके ऊपर भगवत् या गुरुदेव की कृपा हो जाये तो उसका जीवन क्षणांश में ही बदल जाता है ! ऐसे ही उस वकील ने जब **'श्री गुरूदेव सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** का दर्शन-दीदार किया ! तब उसके जीवन में परिवर्तन आया !

एक समय शिकारपुर में वकील भगवानदास के पास ही युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का विशाल सत्संग कुछ भक्तों ने मिलकर रखा था ! आसपास रहने वाले भयभीत हो रहे थे!

क्योंकि इस शहर का बड़ा ही प्रभावशाली वकील भगवानदास कहीं नाराज होकर सत्संग में विघ्न-बाधा न डाल दे ! पर भगवत् कृपा से ऐसा कुछ नहीं हुआ ! किन्तु ईश्वर की लीला ऐसी बनी कि- दूर से सुनाई पड़ रही स्वामी जी की ओजस्वी वाणी उसके हृदय को छू गई! न जाने सद्गुरु महाराज जी में कैसा चमत्कार-जादू था ! जो भी एक बार दर्शन या सत्संग श्रवण करता था ! बस - स्वामी जी का भक्त हो जाता था !

वकील भगवानदास के साथ भी वैसा ही हुआ ! जो कभी भी किसी संत के सत्संग-दर्शन में नहीं गया ! वह आज स्वयं विनम्र भाव से स्वामी जी के पास आया- हे त्रिलोकीनाथ ! आपने हमारे शहर पर बड़ी कृपा की हैं ! हम सभी नगरवासी धन्य-धन्य हो गये ! जो आप जैसे महापुरुष यहाँ पधारें है ! आप प्रतिदिन सत्संग इसी स्थान पर करें ! दूसरी जगह जाने की आवश्यकता नहीं ! वहाँ के लोग यह देखकर हैरान होने लगे ! जिस वकील से हम भयभीत हो रहे थे ! वह सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के पास प्रार्थना कर रहा है ! और तो और स्वयं वकील भगवानदास ने बड़ा विशाल सत्संग पण्डाल बनवाकर स्वामी जी का सत्संग करवाने लगा ! न जाने कैसी दिव्य शक्ति के मालिक थे- सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ! जो पत्थर दिल इन्सान को भी मोम जैसा बना दिया ! इतना ही नहीं, वह प्रतिष्ठित वकील पूरे दिन भर संत-महात्माओं की बड़े श्रद्धा भाव के साथ सेवा करने लगा ! यहाँ तक कि- दो समय का भोजन भी पूरा न लेता ! सारा दिन केवल संतों की सेवा में

संलग्न! बड़े-बड़े भण्डारे का आयोजन करवाने लगा ! पूरे परिवार बाल-बच्चों के साथ संत-महात्माओं की सेवा करता और सत्संग-भजन भाव में मस्त हो जाता !

स्वामी जी ने उसकी सेवा से प्रसन्नचित्त होकर पच्चीस दिन तक शिकारपुर में सत्संग किया ! शहर में सदैव यही चर्चा होती थी कि- जिस व्यक्ति ने कभी भी किसी साधु-संत की सेवा नहीं की थी ! कभी एक पैसा दान-पुण्य में खर्च नहीं किया था ! वह आज **'सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** की कृपा से ऐसा निर्मल स्वभाव वाला और उदारचित कैसे हो गया..? पूरे भण्डारे का खर्च, गरीबों को दान-दक्षिणा देना, सत्संग पण्डाल आदि सब का खर्च स्वयं वहन करने लगा !

ऐसी होती हैं संत-फकीर-मुर्शिदों की भक्तों के ऊपर अनन्त कृपा ! बस - फिर क्या था- वकील भगवानदास स्वामी जी का शिष्य बनकर जीवन भर संतों की सेवा करके अपने जीवन को सफल व सार्थक किया !

धन्य - धन्य है ऐसे दिव्य संत महापुरुष जिन्होंने अनन्त जीवों का कल्याण किया !

डूबती नैया को पार लगाना

एक समय युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज संत-मण्डली व कुछ भक्तों के साथ किसी अन्य स्थान से सत्संग-भजन कर पुनः टण्डाआदम '**श्री अमरापुर स्थान**' पर आ रहे थे ! किन्तु मार्ग में आते समय सिन्धु नदी पार करनी थी ! सँध्याकाल का समय था ! एक मल्लाह नाव लिये खड़ा था ! संत व भक्तों के आग्रह पर उस नाविक ने सभी संत-महात्माओं को अपनी नाव में बैठाया ! नौका धीरे-धीरे चल रही थी ! स्वामी जी समाधि लगाये ध्यानस्थ थे ! संतगण व भक्तजन हरिसंकीर्तन व भजन में मस्त थे !

अचानक मल्लाह की निगाह सिन्धु नदी में दूर से आ रही लहरों पर पड़ी ! हवाओं की तेज रफ्तार ! ऊँची-ऊँची लहरों का उठना ! तेज तूफान की आशंका ! नाव सिन्धु नदी के बीचों बीच थी! नाव का डगमगाना ! मल्लाह को कुछ समझ नहीं आ रहा था ! अब क्या करूँ..? कुछ देर ये मौसम ओर चला तो अनर्थ हो जायेगा! इतना जल्दी नाव किनारे पर ले जाना कठिन था ! समझ के बाहर की स्थिति ! स्वामी जी के मुखमण्डल पर ब्रह्मानन्द की मौज.! भजनानन्द की मस्ती ! वृत्ति एकाकार ! समाधिस्थ ! मल्लाह को अब एक ही सहारा था '**सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज**' का ! उसने बड़े स्नेहयुक्त श्रद्धाभाव से स्वामी जी को प्रार्थना की - हे

मालिक ! अब आप ही हमारी रक्षा करो ! आप ही सबके खेवनहार हो ! भव सागर से तो आप पार करते ही हो ! पर अब इस भँवर में फँसी नैया को पार कर सभी को जीवन दान दो !

माँझी को जब समझ न आई, हाथ जोड़ कर बोला ।
तीव्र वेग जल रात अन्धेरी, नैया ले हिचकोला ।
कुछ भी समझ न उसको आये, मनवा देख-देख डर जाये ।
मेरी बुद्धि नहीं करती कुछ काम ।।

स्वामी जी भगवद् लीला को देखकर मन्द-मन्द मुस्कुरा रहे थे ! उन्हें तो किसी प्रकार का कोई भय -डर नहीं था ! सिन्धु नदी के तीव्र वेग को देखकर स्वामी जी ने अपने वृहद् हस्त से इशारा कर दिया ! बस- फिर क्या था ! लहरों का उठना शनैः-शनैः कम होने लगा ! स्वामी जी के आशीर्वाद से सिन्धु नदी का मार्ग साफ व स्पष्ट दिखाई देने लगा ! तब स्वामी जी ने माँझी से हाथ का इशारा करके कहा - अब तुम इस मार्ग से चलो ! हाथ उठाकर स्वामी जी बोले - नाव को इस ओर ले चलो-भाई..!

हाथ उठाकर सद्‌गुरु बोले, नाव को ले चल भाई ।
जो सद्‌गुरु की राह चले, वो नैया डूब ना पाई ।
जो सद्‌गुरु का ले सहारा, उसको मिल जाता किनारा ।
सद्‌गुरु पार करेंगे, पल्ला ले तू थाम ।।

बस ! फिर तो श्री गुरु महाराज जी की कृपा से रास्ता स्वयं ही नजर आने लगा ! सिन्धु नदी शांत होकर बहने लगी ! धीरे-धीरे नाव किनारे लग गयी ! सभी संतगण व भक्तजन सद्गुरु देव भगवान की लीला को देखकर आश्चर्य में पड़ गये ! जिनके साथ स्वयं परमात्म स्वरुप **'सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** रक्षक के रूप में हो ! उन्हें किस बात की चिन्ता ! उन्हें पता होता है हमारा खेवनहार-पालनहार रक्षक हमारे साथ हैं ! ऐसा विश्वास हर भक्त का अपने 'श्री गुरूदेव' के प्रति होना चाहिए ! तो उसका कभी बाल बांका नही हो सकता और वह अवश्य इस भव सागर को पार कर जाता है !

ऐसे पालनहार - तारनहार युगपुरुष सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज को शत् - शत् नमन ! कोटि - कोटि वन्दन !

वाहिद बख्श बना स्वामी जी का शिष्य

परम संत सेवी वाहिद बख्श ! ये व्यक्ति पटवारी बनकर हैदराबाद से खण्डू आया था ! इसका **'युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** से सम्पर्क हुआ ! जब कुछ ईष्यालुओं ने चबूतरे को तोड़ दिया था ! तब सत्संगियों ने सारी हकीकत बताई ! साथ ही उन्होंने वहाँ चलने की प्रार्थना की, तो वे स्वयं चलकर आए ! वहाँ चबूतरे वाले स्थान को पूरा देखा ! वहाँ किसी को कोई परेशानी होती नहीं दिखी ! यह देखकर बोले- ये तो अच्छी बात है कि संत - महात्मा यहाँ सत्संग कर रहे हैं ! फिर सभी प्रेमी उन्हें **'श्री गुरूदेव भगवान'** के पास ले आए !

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के मनमोहक मंगलमय वैराग्यमयी तेजपुंज दर्शन कर वह मुसलमान पटवारी 'वाहिद बख्श' मंत्रमुग्ध हो गया ! एक ही झलक में वाहिद बख्श हमेशा के लिए स्वामी जी के 'श्री चरणों' का चाकर बन गया और बोलने लगा- 'आप तो साक्षात् रब- अल्ला की मूरत लग रहे हैं ! ऐसा लग रहा है जैसे मुझे ईश्वर का साक्षात् दर्शन हो रहा हो !' तब बड़े भक्ति-भाव से पटवारी जी ने स्वामी जी को हाथ जोड़कर सादर दण्डवत् प्रणाम किया !

फिर तो इन्होंने सत्संग का सारा चबूतरा स्वयं के खर्चे से बनवाया और स्वामी जी के चरणों में विनय करने लगा- हे दरवेश

फकीर सांई ! इस गुलाम के लिए और कोई खिजमत (सेवा) हो तो यह गुलाम (सेवक) सदैव आपकी सेवा के लिए हाजिर है ! स्वामी जी- वाहिद बख्श का निष्कपट प्रेम व श्रद्धा देखकर बहुत प्रसन्न हुए ! दूसरे दिन जब वाहिद बख्श स्वामी जी के सत्संग में आया ! तो उन्हें भगवत् भक्त रस का ऐसा तो आनन्द आया कि एक मटका लेकर बड़े भाव से बजाने लगे ! इतना प्रेम से बजाया कि सारे प्रेमीगण भी झूमने व नाचने लगे ! वाहिद बख्श स्वामी जी के **'श्री चरणों'** में निवेदन कर कहने लगा – हे फकीर सांई ! आज आपका भजन – कीर्तन सुनने में बड़ा आनन्द आया और मैं तो सौभाग्यशाली हूँ ! जो मेरी किस्मत मुझे यहाँ खण्डू में पटवारी बनाकर ले आयी है!

स्वामी जी भी मुस्कुराकर बोले – भाई बहुत अच्छा ! दर्शन व सत्संग भी किसी-किसी नसीब वालों को ही मिलता है ! तुम्हारे भाग्य अच्छे हैं ! अब आप रोज भजन-सत्संग में आकर मटका बजाने की सेवा किया करें ! कभी-कभी संतो – दरवेशों के कलाम(भजन) भी सुनाया करें !

स्वामी जी की आज्ञानुसार अब वाहिद बख्श प्रतिदिन सत्संग में आता और मटका बजाकर भजन सुनाया करता था ! तत्पश्चात् वाहिद बख्श जीवनपर्यन्त स्वामी जी की सेवा में रहा और **'नाम-दान'** की दीक्षा लेकर स्वामी जी का शिष्य बन गया ! फिर जीवन भर सत्संग-दर्शन का खूब आध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया !

धन्य – धन्य है ऐसे दिव्य संत – महापुरुष ! शत् – शत् नमन !

खटू भक्त की पुकार-स्वप्न में हुई साकार

सत्गुरु सम केवट नहीं, देखी जगत मंझार !
कह टेऊँ भव सिन्धु से, सबको करहै पार !!

हालनि गाँव का निवासी खटू भगत, जो कि युगपुरुष सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का अनन्य भक्त था और सिन्ध में जगह-जगह सद्गुरु महाराज जी की प्रेमा-भक्ति के गुणानुवाद गाया करता था ! उम्र का पड़ाव, प्राकृतिक शारीरिक प्रक्रिया अन्तर्गत उसका तन भी अब वृद्ध अवस्था को प्राप्त हो चुका था ! लेकिन मन की तार सद्गुरु महाराज जी से दिन-रात जुड़ी हुई थी ! कहते हैं न कि जिस बात का दिन भर चिन्तन-मनन किया जाए तो स्वप्न में भी वही बातें-चित्रित होकर आती रहती हैं ! बार-बार उसी का स्मरण कराती हैं !

एक बार उसकी क्षीण काया ने रात के अंतिम प्रहर अर्थात् भोरवेले को स्वप्न में सद्गुरु महाराज जी को पुकारा कि स्वामी जी अब मेरा अंत समय आ गया है ! आप आकर मेरी अंत वेली सहाई करें ! स्वप्न में की गई सच्ची पुकार ईश्वरावतार सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के हृदय तक पहुँच गयी ! भक्त के दिल से निकली सच्ची पुकार वो चाहे स्वप्न में ही क्यों न हो, सद्गुरु महाराज जी के हृदय तक क्यों न पहुँचेगी ..?

इतना तो करना स्वामी - जब प्राण तन से निकले...

बस ! फिर क्या था- जहाँ सद्गुरु महाराज जी थे वहाँ से अकेले ही पैदल ही निकल पड़े हालनि गाँव ! कुछ ही घंटों में पूज्य श्री गुरुदेव भगवान '**भगत खटू**' के निवास घर पर पहुँच गए ! तब खटू भगत की अंतिम श्वासें चल रही थी ! उनके नेत्रों ने जब भगवत् स्वरुप सद्गुरु महाराज जी के दर्शन किये तो आँखे दिव्यता से चमक उठीं ! खटू भगत के चेहरे पर एक अद्भुत शान्ति दिखाई देने लगी ! हृदय गद्-गद् हो गया ! उठकर उसने सद्गुरु महाराज जी को दण्डवत् प्रणाम किया और '**श्री गुरु चरणों**' को धोकर मुख में चरणामृत का पान किया ! स्वामी जी ने अपने प्यारे खटू भगत का प्रणाम स्वीकार किया और आर्शीवाद देते हुए '**सतनाम साक्षी**' का उच्चारण किया और सतनाम साक्षी कहते हुए उसी क्षण खटू भगत ने सद्गुरु महाराज जी की उपस्थिति में देहोत्सर्ग किया ! अब भला ऐसे भक्तों की मुक्ति कैसे नही होगी..? ऐसे भक्त तो निश्चय ही गुरुनगरी अमरापुर वैंकुठधाम में निवास करेंगे ! ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है ! स्वप्न में की गई पुकार भी होती हैं साकार ! अर्थात् अंत समय में खटू भक्त '**श्री गुरूदेव भगवान**' के दर्शन कर परम पद को प्राप्त किया ! धन्य-धन्य ऐसे भक्त - जिन्हें अंत समय में भी महापुरुष दर्शन देते है !

संत की निंदा करना महापाप

टण्डेआदम का एक निवासी भाई लालचन्द ! जो कि सदैव सही अर्थों में सच्चे युगपुरुष सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज व संतों की निन्दा करता रहता था ! क्योंकि उस समय स्वामी जी के भक्ति-तपस्या की कीर्ति चहुँ ओर तेजी से फैल रही थी ! सभी लोग स्वामी जी को अवतारी पुरुष मानते थे ! यह बात उससे देखी नहीं जाती थी ! अतः सभी संतों को बहुत बुरा-भला कहता रहता था ! संत-महात्माओं की परमात्मा के प्रति अलौकिक मस्ती, उनके लिए क्या निन्दा..? क्या यश ..? वे तो भगवान के बंदे होते हैं ! उन्हें तो प्रभु में पूर्ण विश्वास होता है ! सब कुछ करने-कराने वाले परमात्मा ही हैं !

ऐसे ही एक बार भाई लालचन्द ने स्वामी जी के लिए उल्टे-सीधे लेख अखबार में छपवा दिए ! जिससे श्री गुरुदेव जी का अपमान हो ! उन्हें नीचा दिखाया जा सके, पर स्वामी जी की तो अपनी मौज-वैराग्यवृति ! मान-अपमान, राग-द्वेष, स्तुति-निन्दा, यश-अपयश सभी वृत्तियों से परे ! किसी प्रकार का कोई विरोध प्रदर्शन नहीं ! कुछ भी नही कहा ! उधर लालचन्द रास्ते में खड़ा होकर इस बात की प्रतीक्षा कर रहा था कि साधु-संत अखबार देखकर क्या प्रतिक्रिया करते है..? संत-महापुरुषों ने तो कुछ नहीं कहा ! पर संत की निन्दा-अपमान भगवान से सहन नहीं होती ! वे

दण्ड अवश्य ही देते हैं या फिर प्रकृति उसे दण्ड देती है ! खण्डू में बाढ़ आना, प्लेग बीमारी फैलना आदि ये प्राकृतिक प्रकोप **'सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** को सताने का ही परिणाम था !

उसी समय भगवान की ऐसी लीला हुई कि जिस रास्ते पर वह खड़ा था ! वहाँ पर एक भयंकर काले सर्प ने उसे डस लिया ! वह उसी रास्ते पर गिर पड़ा ! चीखा-चिल्लाया पर किसी ने नहीं सुनी ! असहनीय पीड़ा से अत्यधिक व्याकुल ! जहर धीरे-धीरे शरीर में फैल रहा था ! तभी कहा गया है-

प्रभु किसे नहीं मारता, पापी नहीं हैं राम ।
आप ही मर जात हैं, कर कर खोटे काम ।।

भगवान बिना कारण किसी को नहीं मारता ! व्यक्ति स्वयं खोटे कर्म करके अपनी मृत्यु को बुलाता है ! संत की निन्दा अर्थात् भगवान का अपमान ! भगवान अपने संत-भक्त की निन्दा कभी सहन नहीं कर सकते !

आखिरकार लालचन्द जैसे-तैसे चलकर अपने घर पहुँचा ! उसे इस हाल में देखकर घर-परिवार वाले बड़े हैरान हो गये ! डाक्टर बुलवाया गया ! किन्तु पूरे शरीर में विष फैल चुका था ! बचने का कोई उपाय नहीं था ! थोड़ी देर बाद लालचन्द की मृत्यु हो गई !

सच्चे संत-महात्मा तो सदैव परोपकारी होते हैं ! वे कभी भी किसी का बुरा नहीं चाहते ! परन्तु जो मनुष्य निन्दक है वे स्वयं मृत्यु को बढ़ावा देते हैं !

भगवान के घर देर है पर अन्धेर नहीं ! जिनके मन में अभिमान होता है कि ये साधु-संत हमारा क्या कर लेंगे ??? किन्तु उन्हें मालूम नहीं ! जो कार्य भगवान न कर सके ! वह कार्य सच्चा संत - फकीर कर सकता है ! उनके पास तपस्या-भक्ति की अद्भुत शक्ति होती है ! वे ऋद्धि - सिद्धि के मालिक होते हैं ! वे जैसा कार्य चाहे वैसा कार्य कर सकते हैं ! इसलिए जीवन में कभी भी किसी संत - दरवेश - फकीर - साधु का अपमान नहीं करना चाहिए और न ही सताना चाहिए ! अन्यथा उसका दुष्परिणाम होता है ! महापुरुष तो मान - अपमान से परे होते हैं ! भगवान उनके रखवाले होते है ! सदैव संतो का मान रखते है एवं सदैव उनकी रक्षा करते है!

ऐसे महापुरुषों को शत- शत नमन...

भेजने वाले सांई टेऊँराम लेने वाले सांई टेऊँराम

संत-महापुरुषों की लीला अपरम्पार ! वे जैसा चाहें- वैसा कर सकते हैं ! फिर चाहे मिट्टी को भी सोना कर दे या लोहे को सोना !

ऐसे ही थे परमहँस महायोगी सिंध हिंद के महान संत, परम पुरुष, समस्त ऋद्धि-सिद्धि के दाता युगपुरुष आचार्य श्री सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज ! उनके देहोत्सर्ग के पश्चात् जब पहला चैत्र मेला सिंध टण्डाआदम दरबार में स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में मनाया जा रहा था ! मेले की तैयारियाँ जोर-शोर से चल रही थी ! जिज्ञासु और आम लोग मेले में भाग लेने के लिए आ रहे थे ! उस समय कोठार (भण्डार) की व्यवस्था (देखभाल) पर स्वामी चन्दनप्रकाश जी थे ! श्री प्रभदास और उसके एक सेवाधारी ने आकर प्रभदास जी को कहा कि-आज रात के लिए तो भोजन की व्यवस्था हो गयी और कल सबेरे बच्चों के लिए जो खिचड़ी बनेगी ! इतने दाल-चावल हैं ! बाकी लोगों के लिए शीघ्र भोजन सामग्री का प्रबन्ध करें !

सूचना पाकर प्रभदास स्वामी चन्दनप्रकाश जी के पास गये और भोजन सामग्री के विषय में पूछा- उन्होंने कहा कि- भोजन सामग्री इतनी नहीं है जो कल के लिए भोजन बन सकें ! इस विषय

में आप जाकर स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को बता दे ! फिर जैसी आज्ञा होगी वैसा किया जायेगा !

जब श्री प्रभदास स्वामी जी के पास आते हैं ! उस समय नगर के कुछ सेठ लोग स्वामी जी के पास बैठे थे और मेले के लिए अन्न, धन इत्यादि की अपनी सेवाएँ देने के लिए प्रार्थना कर रहे थे! स्वामी चन्दनप्रकाश जी भी अनुरोध करने लगे कि इनको राशन के लिए बोले ! तब स्वामी सर्वानन्द जी का तो एक ही उतर था कि- हम श्री गुरू महाराज के सिवा ओर किसी के सामने हाथ नहीं फैलायेंगे ! मैं अभी जाकर अपने गुरुदेव को (जो सबसे बड़ा सेठ हैं) भोजन सामग्री इत्यादि के विषय में प्रार्थना करता हूँ ! अगर गुरुदेव ने मेले के लिए आज रात भर में भोजन सामग्री की पूरी व्यवस्था कर दी तो ठीक हैं ! नहीं तो मैं और आप दोनों यहाँ से चले जाएँगे! जिनका मेला हैं - वही आकर पूरा करेंगे ! हम तो उनके सेवक है ! दास है ! इस विषय में सवेरे पाँच बजे से पहले मुझे सूचना दे ! स्वामी जी बात सुनकर प्रभदास अवाक् रह गये !

अब रात होने लगी ! स्वामी जी श्री मंदिर में 'श्री गुरूदेव भगवान' के पास गये और मेले के कार्यों को गुरूदेव के सामने निवेदन करने लगे ! लगभग आधी रात बीत चुकी थी ! अचानक एक ट्रक और सात बैलगाड़ियाँ सामान से भरी हुई दरवाजे के सामने आकर खड़ी हो गई ! ट्रक और गाड़ियों के चालक बड़े जोर-जोर से भगत टेऊँराम.... भगत टेऊँराम.... कहकर पुकारने लगे..! सेवादारी आवाज सुनकर सावधान हो गये और एकदम

दौड़कर वहाँ गये और चालकों से पूछने लगे कि- क्या बात है..? उन्होंने कहा कि - भगत टेऊँराम को बुला लाओ...तो सामान सभाल ले ! हमें देर हो रही है..! उनको जल्दी बुला लाओ..! प्रभदास ने उन चालकों से पूछा कि - ये सामान किसने भेजा है.. ? उन्होंने कहा कि - सेठ लक्ष्मीनारायण ने भेजा है ! प्रभदास ने सारा सामान संभाल कर भण्डार में रखवाया ! फिर चालकों को कहा कि - जरा ठहर जाओ तो मैं स्वामी जी को बुलाकर ले आता हूँ ! उन्होंने कहा कि- हमें देर हो रही है फिर कभी आयेंगे ! ऐसे कहकर वे लोग चले गये ! फिर भी प्रभदास उनके पीछे गया ! मगर वे किंचित क्षण में न जाने कहाँ अदृश्य हो गये ! सवेरा होते ही प्रभदास स्वामी जी के पास गया ! चरणों में प्रणाम... कर सारी घटना सुनाई और कहा कि - धन्य है आपकी गुरुभक्ति और श्री गुरुदेव में आपका अटूट अटल विश्वास...!

ऐसे ही जब कभी भी सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज को किसी भी चीज की जरूरत पड़ती थी तो वह अपने **'इष्ट भगवान सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज'** को कहते थे ! अपने गुरुदेव को ही अपना इष्ट भगवान सब कुछ मानते थे !

सद्गुरु सदा मेरे साथ हैं - मुझे उन्हीं का ही आसरा हैं ! सद्गुरु टेऊँराम जी के बिन और कोई मुझे आधार नहीं वे उन्हे हर समय - पल - घड़ी अपने साथ देखते थे और सदैव उन्हीं के भक्ति स्मरण में मग्न रहते थे !

श्री अमरापुर स्थान

प्रेम प्रकाशियों के लिए, श्री अमरापुर स्थान ।
सात द्वीप नौ खण्ड में, तीर्थ यही महान ।।

श्री गुरूदेव के धाम की महिमा अत्यंत हैं ! जिस स्थान पर गुरू का वास हो ! वहाँ की रज मस्तक पर धारण करने से जिज्ञासु अपने जन्म- जन्मान्तरों के पापों से मुक्त हो जाता हैं ।

गुरु के धाम में सद्गुरु के नित्य निवास से निरन्तर उनका अलौकिक सामिप्य का सुख पाकर भक्तगण आनन्द मग्न हो जाते हैं! इस पुण्य स्थली का ऐसा महात्म्य है कि एक बार दर्शन पाकर ही भक्तजन धन्य- धन्य बन जाते हैं !

इस तपोभूमि पर ना जाने कितने योगी- वैरागी- तपस्वी- सन्त –महापुरुषों ने पवित्र धारा पर पग धरे हैं ! जैसा कि कहा गया है-

से सब स्थल तीर्थ जानो, सन्त जहाँ पग धरते हैं ।।

उन्हीं सत–महापुरुषों की तपस्या का प्रभाव अभी तक व्याप्त हैं – इस पवित्र तीर्थ स्थल पर !

श्री अमरापुर स्थान अर्थात् यथा नाम तथा गुण के अनुरूप अमर लोक- अमर पद- अमृतत्व- आत्म ज्ञान की प्राप्ति का सरल व सुगम स्थान ! इस स्थल में प्रवेश करते ही मन भक्तिमय-

ज्ञानमय- आनन्दमय सा हो जाता हैं ! गुरू दर्शन करने से संतप्त हृदय में आत्मसुख व शान्ति की अनुभूति प्राप्त होने लगती हैं !

श्री अमरापुर स्थान को पूर्णाक भी मान सकते हैं ! "**अमरापुर**" का नाम भी १०८ (माला) के अन्तर्गत आता है ! यह भी एक ब्रह्म शब्द है !

"अमरापुर" इसमें सात अक्षर हैं :-

1.	**अ**	**:**	**1**
2.	**म**	**:**	**25**
3.	**र**	**:**	**27**
4.	**आ**	**:**	**2**
5.	**प**	**:**	**21**
6.	**उ**	**:**	**5**
7.	**र**	**:**	**27**
	कुल	**:**	**108**

इसी प्रकार श्री अमरापुर स्थान भी १०८ पूर्ण अंकों से परिपूर्ण है ! पूर्णा ब्रह्मानंद की प्राप्ति के लिए नित्य प्रति '**श्री अमरापुर स्थान**' का दर्शन करने से आत्म पद की प्राप्ति होगी !

संकलन / संपादक

प्रेम प्रकाशी संत श्री मोनूराम जी

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर (राज.)

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, अमदाबाद (गुज.)